जनवरी, 2025

CUET (UG)

समसामयिक घटनाएँ और सामान्य ज्ञान

CUET (UG) जनरल टेस्ट हेतु

For More Information Visit www.drishticuet.com or Contact on 8010-699-000

drishticuethindi drishticuethindi DrishtiCUET_Hindi @drishticuethindi

In the journey towards achieving a distinguished career, choosing the right guide is as crucial as the aspirant's dedication and hard work. Drishti, with its pioneering CUET (UG) program, stands as a beacon of excellence for young aspirants.

Admissions Open in English & Hindi Medium for CUET (UG) Foundation and Crash Courses

CUET (UG) Foundation & Crash Courses in English Medium

- CUET (UG) General Aptitude Test
- CUET (UG) English Language
- CUET (UG) History Domain
- CUET (UG) Political Science Domain
- CUET (UG) Geography Domain
- CUET (UG) Psychology Domain
- CUET (UG) Economics Domain
- CUET (UG) Mathematics Domain
- CUET (UG) Business Studies Domain
- CUET (UG) Accountancy Domain
- CUET (UG) Chemistry Domain
- CUET (UG) Physics Domain
- CUET (UG) Biology Domain
- CUET (UG) Combo (General Aptitude Test + English Language)

CUET (UG) फाउंडेशन और क्रेश कोर्सेस हिंदी माध्यम में

- CUET (UG) जनरल एप्टीट्यूड टेस्ट
- CUET (UG) हिंदी भाषा
- CUET (UG) इतिहास डोमेन
- CUET (UG) राजनीति विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) भूगोल डोमेन
- CUET (UG) अर्थशास्त्र डोमेन
- CUET (UG) समाजशास्त्र डोमेन
- CUET (UG) भौतिक विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) रसायन विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) जीव विज्ञान डोमेन
- CUET (UG) Combo (जनरल एप्टीट्यूड टेस्ट + हिंदी भाषा)

Key Features of Drishti CUET (UG) Courses

- Best Faculties
- Live Classes
- Topic-wise Practice Worksheets
- Up-to-date Study Materials As Per Latest Syllabus
- Post Class Assistance & Doubt Solving Sessions
- Daily News Updates and Monthly Current Affairs Compilation

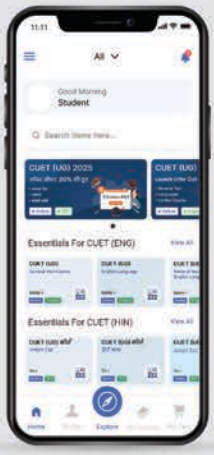

Drishti Learning App

Get that 'Online Edge' in your preparation for CUET (UG), all from the convenience of your home.

Website | YouTube | PYQ's as Quizzes | Scan me for English Courses | Scan me for Hindi Courses

For more information please contact on **87501-87501**

विवरणिका

1. भारतीय राजव्यवस्था

- अफसमान नागरिक संहिता (यूसीसी) 1
- चुनाव आयुक्तों की नई नियुक्ति प्रक्रिया 2

2. भूगोल

- तिब्बत में भूकंप 4
- महाकुंभ मेले के लिए कुंभवाणी एवं कुंभ मंगल ध्वनि का शुभारंभ 4
- लॉस एंजिल्स जंगल की आग 5
- बोरियल वन 7

3. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

- भोपाल गैस त्रासदी 8
- बैंडेड रॉयल तितली 8
- पश्चिमी घाट 9
- कप्पड़ और चाल समुद्र तटों को ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त हुआ 10
- आर्द्रभूमि शहर 10

4. भारतीय अर्थव्यवस्था

- "सकल घरेलू उत्पाद" आधार वर्ष 12
- कर बचाव संधियों पर नए दिशा निर्देश 12

5. सामान्य विज्ञान

- मानव मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) 14
- नमो भारत रैपिड रेल 14
- भारत का पहला ग्लास ब्रिज 15
- H5N1 बर्ड फ्लू 16
- जेड- मोड़ सुरंग 16

विवरणिका

- भारत ने उत्कर्ष का शुभारंभ किया 17
- इसरो का अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग 18
- भार्गवस्त्र माइक्रो मिसाइल 18
- आईएनएस मुंबई 19
- संजय - युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली 19
- इसरो ने 100 वां प्रक्षेपण पूरा किया 20

6. इतिहास

- सुभाष चंद्र बोस और पराक्रम दिवस 22
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती 23

7. विश्व मामले

- इंडोनेशिया पूर्ण सदस्य के रूप में ब्रिक्स में शामिल हुआ 24

7. विविध

- पुरस्कार 25
- समाचार में रोग 27
- सरकारी योजनाएँ 28
- महत्वपूर्ण तिथियाँ एवं घटनाएँ 31
- समाचार क्रमबद्ध में संगठन 38
- चर्चित व्यक्तित्व 40
- समाचार में स्थान 41
- खेल 43

1 भारतीय राज्यवयवस्था

अफसमान नागरिक संहिता (यूसीसी)

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड भारत में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने वाला पहला राज्य बनकर इतिहास रचने जा रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार ने पंजीकरण सेवाओं से संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधानों सहित यूसीसी नियम पुस्तिका को अपनी मंजूरी दे दी है।

समान नागरिक संहिता (यूसीसी)

- **समान नागरिक संहिता के बारे में**
  - समान नागरिक संहिता का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 44 में राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अंतर्गत किया गया है, जो पूरे भारत में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक कानूनों की वकालत करता है।
  - इसका कार्यान्वयन सरकार के विवेक पर छोड़ दिया गया है।
  - गोवा एकमात्र भारतीय राज्य है जहां समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू है, जो 1867 के पुर्तगाली नागरिक संहिता पर आधारित है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** ब्रिटिश भारत ने समान आपराधिक कानून लागू किए, लेकिन पारिवारिक कानूनों को उनके संवेदनशील स्वरूप के कारण मानकीकृत करने से परहेज किया। संविधान सभा में, कुछ मुस्लिम सदस्यों ने व्यक्तिगत कानूनों के बारे में चिंताओं के कारण समान आपराधिक संहिता का विरोध किया, जबकि केएम मुंशी, अल्लादी कृष्णस्वामी और बीआर अंबेडकर जैसे नेताओं ने समानता के लिए इसकी वकालत की।
- **विधि आयोग का रुख**
  - 21वें विधि आयोग (2018) ने उस समय समान नागरिक संहिता के निर्माण को "न तो आवश्यक और न ही वांछनीय" माना और इसके बजाय पारिवारिक कानूनों में सुधार की सिफारिश की।

समान नागरिक संहिता पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय का रुख

क्या आप जानते हैं ?

राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत (DPSP) संविधान के भाग IV में उल्लिखित हैं, जिसमें अनुच्छेद 36 से 51 शामिल हैं। वे नागरिकों के कल्याण को बढ़ावा देते हुए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्राप्त करने के लिए सरकार के लिए दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करते हैं। हालाँकि वे गैर-न्यायसंगत हैं, जिसका अर्थ है कि उन्हें कानून की अदालत में लागू नहीं किया जा सकता है, वे शासन को निर्देशित करने में मौलिक हैं।

DPSP का उद्देश्य असमानताओं को कम करना, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना और स्वास्थ्य, शिक्षा, समान संसाधन वितरण और अंतर्राष्ट्रीय शांति जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना है। उल्लेखनीय प्रावधानों में एक समान नागरिक संहिता (अनुच्छेद 44) को लागू करना, मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करना (अनुच्छेद 39A) और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना (अनुच्छेद 48A) शामिल हैं।

चुनाव आयुक्तों की नई नियुक्ति प्रक्रिया

चर्चा में क्यों ?

मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें और पदावधि) अधिनियम, 2023, पारंपरिक वरिष्ठता-आधारित दृष्टिकोण से आगे बढ़कर नई व्यवस्थाएं प्रस्तुत करता है, तथा पहली बार मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों के चयन के दायरे को व्यापक बनाता है।

मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए नया कानून

पृष्ठभूमि

- संविधान का अनुच्छेद 324 राष्ट्रपति को संसदीय कानून के आधार पर मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और चुनाव आयुक्तों (ईसी) की नियुक्ति करने की अनुमति देता है, लेकिन 2023 तक ऐसा कोई कानून अस्तित्व में नहीं था।
- पहले नियुक्तियां प्रधानमंत्री की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा की जाती थीं।
- सर्वोच्च न्यायालय (अनूप बरनवाल बनाम भारत संघ मामला) ने 2023 में प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता और भारत के मुख्य न्यायाधीश की सदस्यता वाली एक समिति को निर्देश दिया कि वह कानून बनने तक स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए नियुक्तियों की सिफारिश करे।

अधिनियम के प्रमुख प्रावधान

- **पात्रता:** केवल वर्तमान या पूर्व सचिव स्तर के अधिकारी ही पात्र हैं।
- **विस्तारित चयन विधि:** वरिष्ठता की परंपरा को तोड़ते हुए अब मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति चुनाव आयोग के बाहर से भी की जा सकेगी।
- **खोज समिति :** अधिनियम की धारा 6 में विधि एवं न्याय मंत्री तथा दो वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में एक खोज समिति की स्थापना की गई है, जिसका कार्य पांच उम्मीदवारों का पैनल तैयार करना है। इन सिफारिशों को अंतिम निर्णय लेने के लिए चयन समिति को भेजा जाता है।
- **चयन समिति :** इसमें प्रधानमंत्री, एक कैबिनेट मंत्री और लोकसभा में विपक्ष के नेता शामिल होते हैं, जिनके पास पैनल से चयन करने या किसी बाहरी उम्मीदवार को नामित करने का अधिकार होता है।

राष्ट्रीय आपातकाल

अर्थ

- **अनुच्छेद 352:** युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह के कारण उत्पन्न आपातस्थिति।
- 1978 के 44 वें संशोधन अधिनियम द्वारा "आंतरिक अशांति" के स्थान पर "सशस्त्र विद्रोह" शब्द प्रतिस्थापित किया गया।

घोषणा के आधार

- जब भारत या उसके किसी भाग की सुरक्षा को युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह से खतरा हो।

घोषणा की प्रक्रिया

- इसके लिए मंत्रिमंडल की लिखित अनुशंसा (सहमति) की आवश्यकता है, न कि केवल प्रधानमंत्री की सलाह की।
- **मिनर्वा मिल्स केस (1980) :** राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को दुर्भावनापूर्ण, असंगत या बेतुके होने के आधार पर न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है।

अनुमोदन

- इस घोषणा को संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत (कुल सदस्यता का बहुमत + उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत) द्वारा इसके जारी होने के एक महीने के भीतर अनुमोदित किया जाना चाहिए।

- यदि यह घोषणा उस समय जारी की जाती है जब लोक सभा भंग हो गई हो या एक माह की अवधि के दौरान विघटन हो गया हो, तो यह घोषणा नवगठित लोक सभा की पहली बैठक के 30 दिन बाद तक प्रभावी रहती है, बशर्ते कि राज्य सभा ने इसे पहले ही अनुमोदित कर दिया हो।

अवधि

- यदि संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से इसे मंजूरी दे दी जाती है तो आपातकाल छह महीने तक जारी रहता है।
- इसे हर छह महीने में संसदीय अनुमोदन से अनिश्चित काल तक बढ़ाया जा सकता है।

आपातकाल की समाप्ति

- राष्ट्रपति किसी भी समय बाद में घोषणा द्वारा इसे रद्द कर सकते हैं, जिसके लिए संसदीय अनुमोदन की आवश्यकता नहीं है।
- यदि लोक सभा साधारण बहुमत (उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का बहुमत) से आपातकाल को जारी रखने की अस्वीकृति का प्रस्ताव पारित कर दे तो आपातकाल को हटाया जाना चाहिए।

केंद्र-राज्य संबंध

- **कार्यपालिका:** केंद्र किसी भी मामले पर राज्य को कार्यकारी निर्देश देने का हकदार हो जाता है।
- **विधायी:** संसद राज्य सूची में उल्लिखित किसी भी विषय पर कानून बना सकती है। यदि संसद सत्र में नहीं है, तो राष्ट्रपति ऐसे विषयों पर अध्यादेश जारी कर सकते हैं।
- राज्य विधानसभाओं को निलंबित नहीं किया जाता है। हालाँकि, राज्य के विषयों पर संसद द्वारा बनाए गए कानून आपातकाल समाप्त होने के छह महीने बाद तक प्रभावी रहते हैं।
- **वित्तीय:** राष्ट्रपति केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व के संवैधानिक वितरण को संशोधित कर सकते हैं।

आपात काल के दौरान लोक सभा और राज्य विधान सभा की अवधि

- संसद, आपातकाल के दौरान लोक सभा के कार्यकाल को उसके सामान्य कार्यकाल (5 वर्ष) से एक वर्ष के लिए बढ़ा सकती है।
- यही बात राज्य विधान सभाओं पर भी लागू होती है।
- आपातकाल समाप्त होने के छह महीने बाद यह विस्तार समाप्त हो जाएगा।

आपातकाल में मौलिक अधिकारों पर प्रभाव

- **अनुच्छेद 19:** राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान स्वत: निलंबित हो जाता है और आपातकाल समाप्त होते ही बहाल हो जाता है। 44वें संशोधन के अनुसार, केवल युद्ध या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में ही इसे निलंबित किया जा सकता है।
- **अन्य मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 359):** राष्ट्रपति को आपातकाल के दौरान न्यायालय में मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन को निलंबित करने का अधिकार है। लेकिन, यह केवल निर्दिष्ट अधिकारों पर लागू होगा और अनुच्छेद 20 व 21 पर नहीं।

2 भूगोल

तिब्बत में भूकंप

चर्चा में क्यों ?

7 जनवरी, 2025 को तिब्बत के सबसे पवित्र शहरों में से एक के निकट हिमालय की तराई में एक शक्तिशाली भूकंप आया, जिसमें कम से कम 126 लोगों की जान चली गई और सैकड़ों घर नष्ट हो गए।

भूकंप क्या हैं ?

- भूकंप पृथ्वी की सतह में ऊर्जा के मुक्त होने के कारण होने वाली भूकंपीय तरंगों के कारण होने वाली कंपन है।
- भूकंपीय तरंगों को सीस्मोग्राफ नामक उपकरणों का उपयोग करके रिकॉर्ड किया जाता है।
- सतह के नीचे भूकंप का प्रारंभिक बिंदु हाइपोसेंटर है , और सतह पर इसके ठीक ऊपर स्थित बिंदु उपरिकेंद्र है ।

भूकंप के प्रकार

- सामान्यत: विवर्तनिक (Tectonic) भूकंप ही अधिक आते हैं। ये भूकंप भ्रंशतल के किनारे चट्टानों के सरक जाने के कारण उत्पन्न होते हैं।
- एक विशिष्ट वर्ग के विवर्तनिक भूकंप को ही ज्वालामुखीजन्य (Volcanic) भूकंप समझा जाता है। ये भूकंप अधिकांशत: सक्रिय ज्वालामुखी क्षेत्रों तक ही सीमित रहते हैं।
- खनन क्षेत्रों में कभी-कभी अत्यधिक खनन कार्य से भूमिगत खानों की छत ढह जाती है, जिससे हल्के झटके महसूस किए जाते हैं। इन्हें नियात (Collapse) भूकंप कहा जाता है।
- कभी-कभी परमाणु व रासायनिक विस्फोट से भी भूमि में कंपन होती है। इस तरह के झटकों को विस्फोट (Explosion) भूकंप कहते हैं।
- जो भूकंप बड़े बाँध वाले क्षेत्रों में आते हैं, उन्हें बाँध जनित (Reservoir induced) भूकंप कहा जाता है।

भारत में भूकंप:

- भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा भारत को चार भूकंपीय क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: II, III, IV और V। जोन V भूकंपीय रूप से सबसे अधिक सक्रिय है, जबकि जोन II सबसे कम है।
  - भारतीय हिमालयी क्षेत्र, भूगर्भीय रूप से सक्रिय होने के कारण, मुख्य रूप से भूकंपीय क्षेत्र IV और V में आता है।

महाकुंभ मेले के लिए कुंभवाणी एवं कुंभ मंगल ध्वनि का शुभारंभ

चर्चा में क्यों ?

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रयागराज में एक समर्पित ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) चैनल, 'कुंभवाणी' और विशेष कार्यक्रम 'कुंभ मंगल ध्वनि' का उद्घाटन करने वाले हैं। ये पहल विशेष रूप से महाकुंभ मेले के लिए तैयार की गई हैं।

महाकुंभ मेला 2025

- **आयोजन:** हर 12 साल में आयोजित होने वाली सबसे बड़ी आध्यात्मिक सभाओं में से एक।
- **कहाँ:** प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर।
- **महत्व:**
  - ऐसा माना जाता है कि पवित्र स्नान से पाप धुल जाते हैं और मोक्ष मिलता है।

- आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देता है।
- **प्रतिभागी:** विश्व भर से लाखों तीर्थयात्री, संत और आध्यात्मिक नेता।
- **मुख्य अंश:**
  - भव्य जुलूस, आध्यात्मिक प्रवचन और सांस्कृतिक कार्यक्रम।
  - सुरक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल के लिए व्यापक बुनियादी ढांचा।

ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर)

ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर), जिसे आकाशवाणी के नाम से भी जाना जाता है, भारत का राष्ट्रीय सार्वजनिक रेडियो प्रसारक है, जिसकी स्थापना 1936 में हुई थी। यह प्रसार भारती के अंतर्गत संचालित होता है और पूरे देश में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आकाशवाणी संचार के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, और कई क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारण करके सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देता है।

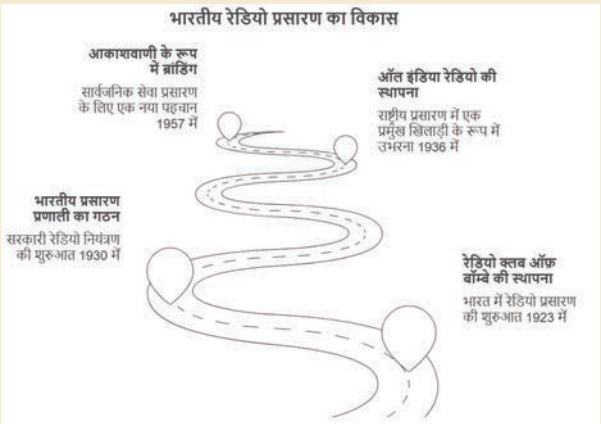

भारतीय रेडियो प्रसारण का विकास

लॉस एंजिल्स जंगल की आग

चर्चा में क्यों?

जनवरी 2025 में, विनाशकारी जंगल की आग ने लॉस एंजेलेस, जिसमें हॉलीवुड हिल्स भी शामिल है, को अपनी चपेट में ले लिया, जिसमें 10 लोगों की जान गई और 1,30,000 निवासियों को विस्थापित होना पड़ा।

जंगल की आग क्या है?

जंगली आग अनियंत्रित आग होती है जो जंगलों, घास के मैदानों जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों में जलती है। वे प्राकृतिक कारणों जैसे बिजली गिरने या ज्वालामुखी विस्फोट के कारण शुरू हो सकती हैं, साथ ही मानवीय क्रियाकलापों जैसे फेंकी गई सिगरेट, बिना देखरेख के कैम्प फायर या स्लेश-एंड-बर्न खेती के कारण भी शुरू हो सकती हैं।

जंगल की आग के कारण

- **मानवीय गतिविधियाँ :** अवैध कैम्प फायर, आतिशबाजी, तथा वनों के निकट शहरी विस्तार (वन्यभूमि-शहरी इंटरफेस) जैसी गतिविधियाँ आग के खतरे को बढ़ाती हैं।
- **शुष्क शीतकाल :** दक्षिणी कैलिफोर्निया जैसे क्षेत्रों में न्यूनतम वर्षा के कारण सूखी वनस्पति पैदा होती है, जिससे आग लगने का खतरा रहता है।
- **सांता एना हवाएँ :** कैलिफोर्निया में तेज़ मौसमी हवाएँ आग को और तेज़ कर देती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन :** लंबे समय तक शुष्क मौसम और वनस्पति तनाव से आग का खतरा बढ़ जाता है।

जंगली आग का प्रभाव

- **जंगल की आग से होने वाला उत्सर्जन :** जंगल की आग से PM2.5, NO_2 और ब्लैक कार्बन जैसे हानिकारक प्रदूषक निकलते हैं, साथ ही ग्रीनहाउस गैसें जैसे CO_2, CH_2 और N_2O भी निकलती हैं, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है, जिससे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है और जलवायु परिवर्तन की स्थिति बिगड़ती है।
- **जलवायु प्रभाव :** जंगली आग से CO_2 उत्सर्जित होता है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।
- **सामाजिक एवं आर्थिक क्षति:** घरों, बुनियादी ढांचे और आजीविका का विनाश; जबरन निष्कासन।
- **मृदा क्षति :** कार्बनिक पदार्थ, मृदा जीवों की हानि, तथा बढ़ता कटाव भूमि की उर्वरता को कम करता है

पनामा नहर

पनामा नहर के बारे में

- पनामा नहर पनामा में स्थित 82 किलोमीटर लंबा एक कृत्रिम जलमार्ग है, जो अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ता है।
- यह समुद्री व्यापार के लिए एक प्रमुख मार्ग के रूप में कार्य करता है।
- यह नहर न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को के बीच की यात्रा में लगभग 12,600 किलोमीटर की बचत करती है।
- पहला जहाज 15 अगस्त 1914 को नहर से गुजरा।

पनामा नहर का मार्ग

पनामा नहर कैसे काम करती है ?

- पनामा नहर जहाजों को एक महासागर से दूसरे महासागर तक ले जाने के लिए लॉक और एलिवेटर्स की एक परिष्कृत प्रणाली का उपयोग करती है।
- यह आवश्यक है क्योंकि दोनों महासागर अलग-अलग ऊंचाई पर हैं, प्रशांत महासागर अटलांटिक महासागर से थोड़ा ऊंचा है।
- अटलांटिक महासागर से प्रशांत महासागर तक यात्रा करने के लिए जहाजों को लॉक्स का उपयोग करके ऊपर उठाना और नीचे उतारना पड़ता है, जो जल लिफ्टों की तरह काम करते हैं।
- जहाजों को ऊपर उठाने के लिए या तो ताले पानी से भर दिए जाते हैं या जहाजों को आवश्यक स्तर तक नीचे लाने के लिए उन्हें खाली कर दिया जाता है।
- संपूर्ण प्रणाली में 12 ताले शामिल हैं, जो कृत्रिम झीलों और चैनलों के माध्यम से संचालित होते हैं।

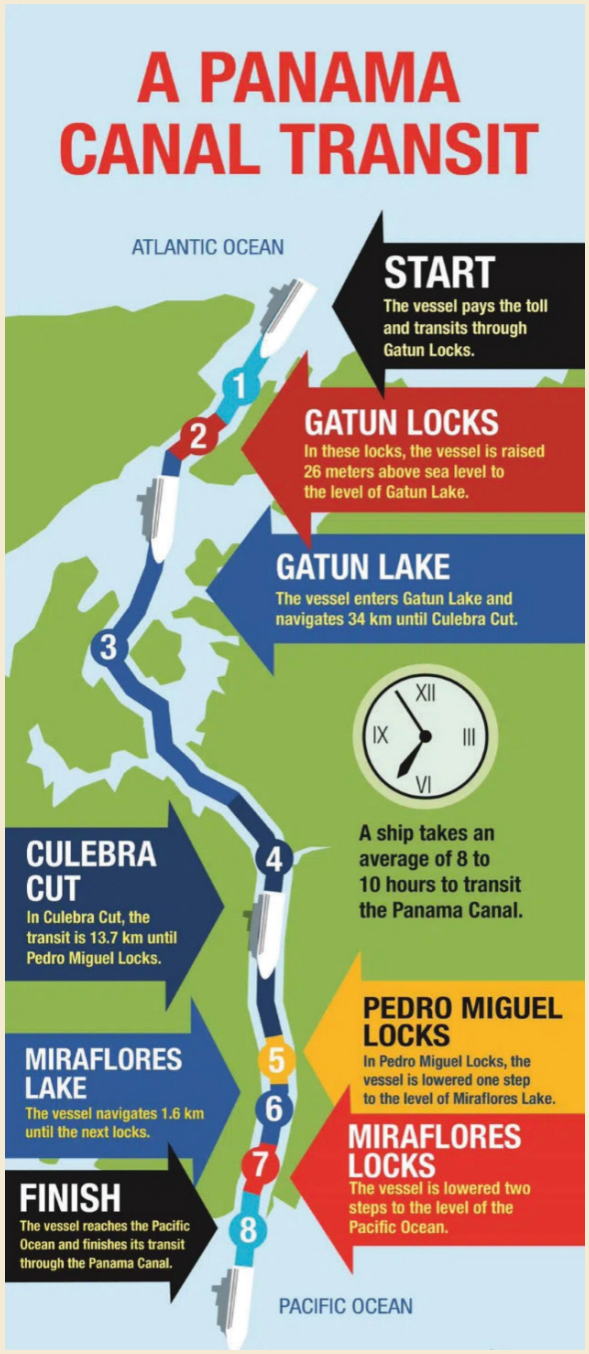

पनामा नहर पारगमन

पनामा का स्थलसंधि

- स्थलसंधि एक संकरी भूमि पट्टी है जो दो बड़े भूभागों को जोड़ती है और दो जल निकायों को अलग करती है।
- पनामा की स्थलसंधि उत्तर और दक्षिण अमेरिका को जोड़ता है, जो प्रशांत और अटलांटिक महासागरों को अलग करता है।
- यह टेक्टोनिक गतिविधि द्वारा बना था जब कैरिबियन प्लेट उत्तर और दक्षिण अमेरिकी प्लेटों के बीच चली गई थी।

पनामा का इस्तमुस

नोट:

- जलडमरूमध्य दो बड़े जल निकायों को जोड़ने वाला एक संकीर्ण जलमार्ग है, जैसे जिब्राल्टर जलडमरूमध्य, जो भूमध्य सागर को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है।
- जलडमरूमध्य जहाज़ों के आवागमन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बोरियल वन

चर्चा में क्यों ?

एक अध्ययन से पता चलता है कि दुनिया के लगभग आधे बोरियल वन जलवायु परिवर्तन के कारण बड़े बदलावों से गुजर रहे हैं, जिससे वन्य आग का खतरा बढ़ रहा है और कार्बन सिंक के रूप में उनकी भूमिका प्रभावित हो रही है।

मुख्य निष्कर्ष

- बोरियल वन वैश्विक औसत से चार गुना तेजी से गर्म हो रहे हैं।
- ये जंगल कम घने होते जा रहे हैं, जिनमें पेड़ों की संख्या घट रही है, जिससे कार्बन भंडारण कम हो रहा है और जंगल की आग का खतरा बढ़ रहा है। दक्षिण से उत्तर की ओर पेड़ों की घनत्व में कमी देखी जा रही है।
- पिघलती हुई परमाफ्रॉस्ट महत्वपूर्ण मात्रा में मिट्टी का कार्बन मुक्त कर सकती है, जिससे कार्बन भंडारण की भविष्यवाणियां और जटिल हो सकती हैं।

बोरियल वन

- बोरियल वन, या "टैगा", दुनिया का सबसे बड़ा स्थलीय बायोम है, जो वैश्विक वनों के 30% और पृथ्वी के भूमि क्षेत्र के 10% भाग पर फैला हुआ है।
- इसका विस्तार आठ देशों में है: कनाडा, चीन, फिनलैंड, जापान, नॉर्वे, रूस, स्वीडन और अमेरिका।
- शंकुधारी वृक्षों (चीड़, स्प्रूस, देवदार) और कुछ चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियों (चिनार, बर्च) से युक्त ये वन उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों में पनपते हैं।
- बोरियल क्षेत्रों में किसी भी अन्य बायोम की तुलना में अधिक सतही मीठा जल मौजूद होता है, जो उत्तरी महासागरों और वैश्विक जलवायु को प्रभावित करता है।
- ये वन वैश्विक लकड़ी का 33% और कागज निर्यात का 25% प्रदान करते हैं, तथा जलवायु विनियमन और कार्बन भंडारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, तथा उष्णकटिबंधीय वनों से प्रतिस्पर्धा करते हैं।

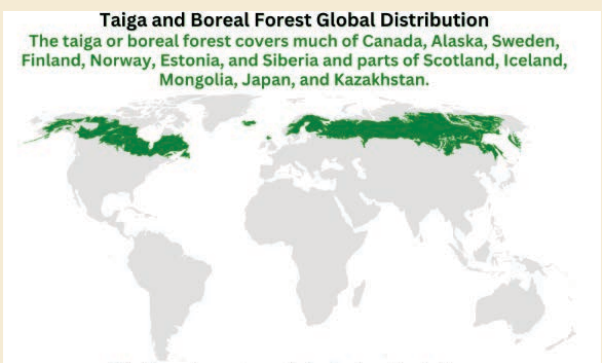

This biome does not occur in the Southern Hemisphere.

3 पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

भोपाल गैस त्रासदी

भोपाल गैस त्रासदी 1984

भोपाल गैस त्रासदी को इतिहास की सबसे भयानक औद्योगिक आपदाओं में से एक माना जाता है। यह 2-3 दिसंबर 1984 की रात को मध्य प्रदेश के भोपाल में यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) के कीटनाशक संयंत्र में हुई थी।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **गैस रिसाव**
  - यूसीआईएल संयंत्र से लगभग 40 टन मिथाइल आइसोसाइनेट (एमआईसी), जो एक अत्यधिक विषाक्त गैस है, लीक हो गई।
  - एमआईसी वायु में 21 भाग प्रति मिलियन (पीपीएम) की सांद्रता पर भी घातक है , तथा साँस लेने के कुछ ही मिनटों में मृत्यु का कारण बन सकता है।
- **तत्काल प्रभाव**
  - गैस के संपर्क में आने से हजारों लोग और जानवर तत्काल मर गये।
  - जीवित बचे लोगों को श्वसन, तंत्रिका संबंधी और प्रजनन संबंधी विकारों के साथ-साथ दीर्घकालिक स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं भी हुईं।
- **जन्मजात विकृतियां**
  - गैस के संपर्क में आने वाली महिलाओं से जन्मे शिशुओं में जन्मजात विकृतियां (जन्म दोष) होने की संभावना काफी अधिक थी।
  - इन विसंगतियों में संरचनात्मक और कार्यात्मक विकार शामिल हैं जो जन्म से पूर्व, जन्म के समय या जीवन में बाद में प्रकट हो सकते हैं।
- **आपदा पर प्रतिक्रिया**
  - सर्वोच्च न्यायालय ने पीड़ितों के लिए अधिक मुआवजे की मांग वाली उपचारात्मक याचिका स्वीकार कर ली।
  - जन्मजात दोषों के आंकड़ों ने मुआवजे में वृद्धि की मांग को मजबूत किया है।

सरकार की प्रतिक्रिया

- सार्वजनिक दायित्व बीमा अधिनियम (1991) लागू किया गया, जिसके तहत उद्योगों के लिए रासायनिक आपदाओं की स्थिति में क्षतिपूर्ति हेतु बीमा रखना अनिवार्य कर दिया गया।
- इस अधिनियम ने पीड़ितों की सहायता के लिए पर्यावरण राहत कोष के निर्माण में भी योगदान दिया।

जारी प्रभाव

- लगभग चार दशक बाद भी, इस त्रासदी के दुष्प्रभाव स्वास्थ्य और पर्यावरण क्षेत्र पर जारी हैं।
- यह घटना औद्योगिक परिचालन में लापरवाही के भयावह परिणामों की याद दिलाती है।

बैंडेड रॉयल तितली

चर्चा में क्यों ?

त्रिपुरा ने सेपाहिजाला वन्यजीव अभयारण्य में दुर्लभ प्रजाति, बैंडेड रॉयल तितली (रचना जलिन्द्रा इंद्र) के पहली बार देखे जाने के साथ जैव विविधता दस्तावेजीकरण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।

बैंडेड रॉयल तितली के बारे में

बैंडेड रॉयल तितली

- **वैज्ञानिक नाम:** रचना जलिन्द्रा
- **प्राकृतिक वास**
  - पश्चिमी घाट, पूर्वोत्तर भारत, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और मलेशिया सहित दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के जंगलों में पाया जाता है।
  - यह घनी वनस्पति को पसंद करता है तथा प्राय: पत्तियों पर आराम करता हुआ दिखाई देता है।
  - **भारत में उप-प्रजातियाँ**
    - आर. जे. मैकान्टिया : दक्षिण-पश्चिम भारत से गोवा तक पाया जाता है।
    - आर. जे. टारपीना : अंडमान में पाया जाता है।
    - आर. जे. इन्द्र : ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश, असम, मेघालय और झारखंड में पाया जाता है।
- **उपस्थिति**
  - **ऊपरी सतह:** नर में गहरे बैंगनी या नीले रंग की चमक होती है, तथा किनारों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे होते हैं; मादा भूरे रंग की होती है, तथा किनारों पर सफेद निशान होते हैं।
  - **निचली सतह:** हल्के भूरे रंग के साथ स्पष्ट सफेद पट्टियां, जो इसे "पट्टीदार" रूप देती हैं।
- **कानूनी संरक्षण:** भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची II के अंतर्गत सूचीबद्ध।

सेपाहिजाला वन्यजीव अभयारण्य (एसडब्ल्यूएल) के बारे में मुख्य तथ्य

- **स्थान:** त्रिपुरा में स्थित, अगरतला से 25 किमी.
- **क्षेत्रफल:** लगभग 18.53 वर्ग किमी.
- **प्रभाग:** विभिन्न पशु प्रकारों के लिए पांच अनुभाग - मांसाहारी, प्राइमेट, खुरधारी, सरीसृप, और पक्षीशाला अनुभाग।
- **उल्लेखनीय विशेषता:** इसमें 2007 में स्थापित क्लाउडेड लेपर्ड नेशनल पार्क भी शामिल है।
- **प्राकृतिक झीलें:** अबसारिका और अमृत सागर।
- **वनस्पति:** नम पर्णपाती वन जिसमें 456 से अधिक वनस्पति प्रजातियां हैं, जिनमें विभिन्न बांस, घास और औषधीय पौधे शामिल हैं।
- **जीव-जंतु**
  - यह निवास स्थान रीसस मैकाक, पिग-टेल्ड मैकाक, कैप्ड लंगूर, स्पेक्टेक्लेड लंगूर और स्लो लोरिस जैसे प्राइमेट्स का घर है।
  - अन्य वन्य जीवों में तेंदुए, धूमिल तेंदुए, सिवेट, भौंकने वाले हिरण, जंगली सूअर, जंगली मुर्गे और केकड़ा खाने वाला नेवला शामिल हैं, जिसे 1930 के दशक के बाद यहां पुन: खोजा गया था।

पश्चिमी घाट

चर्चा में क्यों?

आईयूसीएन ने भारत के पश्चिमी घाट को लुप्तप्राय मीठे पानी की प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट के रूप में पहचाना है। अध्ययन में बताया गया है कि वैश्विक मीठे पानी की 25% प्रजातियों के विलुप्त होने का उच्च जोखिम है, जो पश्चिमी घाट जैव विविधता को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

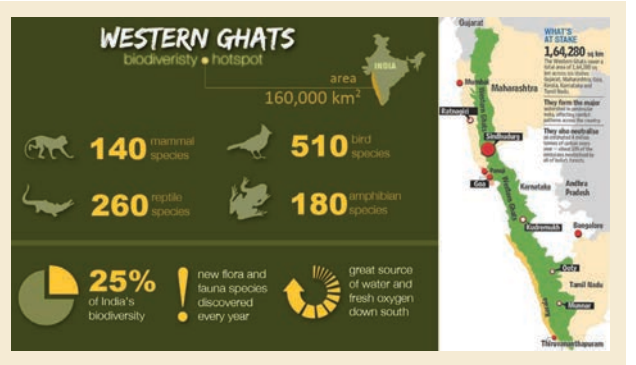

पश्चिमी घाट: प्रमुख बिंदु

- **अवलोकन** : पश्चिमी घाट या सह्याद्रि पहाड़ियाँ जैव विविधता का एक हॉटस्पॉट हैं, जिन्हें यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह पर्वतमाला महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु तक फैली हुई है और भारत की पारिस्थितिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **भू-संरचना:** पश्चिमी घाट या तो ब्लॉक पर्वत हैं या दक्कन पठार के भ्रंशित किनारे हैं। प्रमुख चट्टानों में बेसाल्ट, चार्नोकाइट्स, ग्रेनाइट नीस और मेटामॉर्फिक नीस शामिल हैं।
- **भौगोलिक विस्तार** : सतपुड़ा पर्वतमाला से कन्याकुमारी तक 1,600 किमी. तक फैले हैं। , 140,000 वर्ग किमी. क्षेत्र में , अरब सागर से 30-50 किमी. अंदर तक फैले हुए हैं।
- **पर्वत श्रृंखलाएँ:** नीलगिरि पर्वतमाला शेवरॉय (सर्वरायण)और तिरुमाला पर्वतमाला से जुड़ती है। अनामुडी चोटी सबसे ऊँची चोटी है।

- **नदियाँ**
  - पेरियार, भरतप्पुझा और शरावती जैसी पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ तेज़ गति से बहती हैं और जलविद्युत ऊर्जा के लिए उपयुक्त हैं।
  - गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ धीमी गति से बहती हैं और बड़ी नदियों में मिल जाती हैं।
- **जलवायु और वनस्पति** : घाटों के पश्चिमी ढलानों पर उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन और पूर्वी ढलानों पर पर्णपाती वन हैं, जिनका भारतीय मानसून पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- **वन्यजीव** : यह क्षेत्र नीलगिरि तहर और शेर-पूंछ वाले मैकाक जैसी स्थानिक प्रजातियों के साथ-साथ 325 वैश्विक रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों का घर है।
- **संरक्षित क्षेत्र** : इसमें 2 बायोस्फीयर रिजर्व, 13 राष्ट्रीय उद्यान और कई अभयारण्य शामिल हैं, जिनमें नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र है।
- **महत्व** : पश्चिमी घाट जैव विविधता संरक्षण, जल संसाधन और पूरे क्षेत्र में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

कप्पड़ और चाल समुद्र तटों को ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त हुआ

चर्चा में क्यों ?

जनवरी 2025 में , केरल के कोझीकोड में कप्पड़ बीच और कन्नूर में चाल समुद्र तटों को फाउंडेशन फॉर एनवायरनमेंटल एजुकेशन (एफईई), डेनमार्क द्वारा प्रतिष्ठित ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्रदान किया गया।

ब्लू फ्लैग कार्यक्रम के बारे में

- **स्थापना** : ब्लू फ्लैग कार्यक्रम 1985 में फ्रांस में शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य तटीय और अंतर्देशीय क्षेत्रों में सतत विकास को बढ़ावा देना था।
- **वैश्विक पहुंच** : 2001 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार किया गया, जिसमें 40 से अधिक देशों के समुद्र तटों, मरीनाओं और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन नौकाओं को शामिल किया गया।
- **उद्देश्य** : प्रमाणन समुद्र तटों की प्राकृतिक सुंदरता को संरक्षित करने में मदद करता है और आगंतुकों को पर्यावरणीय जिम्मेदारी और स्थिरता के महत्व पर शिक्षित करता है।
- **ब्लू फ्लैग की वैश्विक मान्यता:** ब्लू फ्लैग एक प्रमाणन है जो समुद्र तटों, मरीनाओं और नौकायन संचालकों को दिया जाता है जो फाउंडेशन फॉर एनवायरनमेंटल एजुकेशन (एफईई) द्वारा स्थापित 33 कड़े मानदंडों को पूरा करते हैं।
- **मुख्य ध्यान केंद्रित क्षेत्र**
  - **जल की गुणवत्ता:** यह सुनिश्चित करना कि समुद्र तट पर पानी पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप हो।
  - **पर्यावरण शिक्षा: स्थिरता** और पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में जनता को सूचित करना।
  - **पर्यावरण प्रबंधन:** पर्यावरण की सुरक्षा, अपशिष्ट प्रबंधन और संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रथाओं को अपनाना।
  - **सुरक्षा और सेवाएं** : यह सुनिश्चित करना कि समुद्र तट **सुरक्षित हों, अच्छी तरह से बनाए रखे गए हों,** और आगंतुकों के लिए आवश्यक सेवाओं से सुसज्जित हों।

ब्लू फ्लैग प्रमाणन वाले अन्य भारतीय समुद्र तट

चंद्रभागा बीच (ओडिशा): भारत का पहला ब्लू फ्लैग समुद्र तट

भारत का पहला ब्लू फ्लैग प्रमाणित समुद्र तट ओडिशा में स्थित चंद्रभागा समुद्र तट है । इस प्रमाणन ने भारत के अन्य समुद्र तटों के लिए एक मानक स्थापित किया, जिससे उन्हें पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को अपनाने और जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने की प्रेरणा मिली। इसके बाद, केरल में कप्पड़ और चाल समुद्र तटों ने भी यही मान्यता हासिल की है।

आर्द्रभूमि शहर

चर्चा में क्यों ?

इंदौर और उदयपुर, रामसर कन्वेंशन के तहत आर्द्रभूमि शहर का मान्यता प्राप्त करने वाले भारत के पहले शहर हैं, जो सतत शहरी विकास और आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

आर्द्रभूमि शहर (WCA)

- COP 12 (2015) के दौरान रामसर कन्वेंशन द्वारा स्थापित।
- शहरी आर्द्रभूमि संरक्षण में असाधारण प्रयासों के लिए शहरों को मान्यता देने वाली एक स्वैच्छिक मान्यता।
- 6 वर्षों के लिए वैध।

उद्देश्य

- शहरी और अर्ध-शहरी आर्द्रभूमि के संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना।
- स्थानीय समुदायों को स्थायी सामाजिक-आर्थिक लाभ प्रदान करना।

महत्व

- शहरों को आर्द्रभूमियों के साथ सकारात्मक संबंध विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- प्राकृतिक या मानव निर्मित आर्द्रभूमि को महत्व देने वाले शहरों को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करता है।

रामसर कन्वेंशन के तहत इंदौर और उदयपुर को मान्यता

- इंदौर और उदयपुर आर्द्रभूमि पर रामसर कन्वेंशन के तहत मान्यता प्राप्त पहले भारतीय शहर हैं।
- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ और सीसी) द्वारा नामित।

इंदौर और उदयपुर में आर्द्रभूमि

- **इंदौर:** सिरपुर झील (रामसर साइट) एक प्रमुख जलीय पक्षी समागम क्षेत्र है और इसे पक्षी अभयारण्य के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- **उदयपुर:** पांच प्रमुख आर्द्रभूमियों - पिछोला, फतेह सागर, रंग सागर, स्वरूप सागर और दूध तलाई से घिरा हुआ, जो शहर की संस्कृति, पहचान और सूक्ष्म जलवायु विनियमन में योगदान देता है।

रामसर कन्वेंशन के बारे में

4 भारतीय अर्थव्यवस्था

"सकल घरेलू उत्पाद" आधार वर्ष

चर्चा में क्यों ?

भारत सरकार सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की गणना के लिए आधार वर्ष को 2011-12 से 2022-23 तक अद्यतन करने की तैयारी कर रही है, जिसका उद्देश्य देश की आर्थिक संरचना का अधिक सटीक प्रतिनिधित्व प्रदान करना है।

आधार वर्ष क्या है ?

आधार वर्ष एक संदर्भ बिंदु है जिसका उपयोग जीडीपी की गणना के लिए किया जाता है ताकि मुद्रास्फीति को समायोजित करके समय के साथ आर्थिक विकास की तुलना की जा सके।

आधार वर्ष में संशोधन क्यों ?

- **नए डेटा स्रोतों को शामिल करना:** 2011-12 से डिजिटलीकरण और क्षेत्रीय विकास के कारण गुणवत्तापूर्ण डेटा की उपलब्धता में सुधार हुआ है।
- **संरचनात्मक परिवर्तनों को समायोजित करना:** यह पिछले दशक में उपभोग पैटर्न, क्षेत्रीय योगदान और उभरते क्षेत्रों के समावेश में बदलाव को दर्शाता है।
- **पिछला आधार वर्ष पुराना हो गया है:** जनवरी 2015 में लागू किया गया 2011-12 का आधार वर्ष अब वर्तमान आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं है।
- **अन्य कारण:** महामारी के बाद के आर्थिक परिवर्तनों के लिए लेखांकन वैश्विक तुलना के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप भी है।

निहितार्थ

- इससे वृद्धि अनुमान में संशोधन हो सकता है।
- यह आर्थिक गतिविधि की अधिक सटीक तस्वीर प्रदान करता है, नीतिगत निर्णयों में सहायता करता है तथा निवेशकों का विश्वास बढ़ाता है।

कर बचाव संधियों पर नए दिशा निर्देश

चर्चा में क्यों ?

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने दोहरे कर बचाव समझौतों (डीटीएए) के तहत मुख्य उद्देश्य परीक्षण (पीपीटी) लागू करने के लिए नए दिशा निर्देश जारी किए।

मुख्य उद्देश्य परीक्षण (पीपीटी) क्या है ?

- पीपीटी बीईपीएस (आधार क्षरण और लाभ स्थानांतरण) कार्य योजना 6 के अंतर्गत एक तंत्र है, जिसका उद्देश्य कर संधियों के दुरुपयोग को रोकना है।
- यह सुनिश्चित करता है कि संधि के लाभ तभी प्रदान किए जाएं जब लेनदेन का प्राथमिक उद्देश्य संधि के इच्छित उद्देश्यों के अनुरूप हो।

नये मानदंड क्यों ?

- **क्षेत्र को स्पष्ट करना** : द्विपक्षीय प्रतिबद्धताओं वाली संधियों (जैसे, भारत-मॉरीशस डीटीएए) में पीपीटी को लागू करने में अस्पष्टता को संबोधित करता है।
- **ग्रैंडफादरिंग प्रावधान** : मौजूदा संधियों के तहत विशिष्ट प्रावधानों को पीपीटी पर वरीयता दी जाएगी।
- **प्रयोज्यता :** प्रावधान 1 अप्रैल, 2025 से लागू होंगे तथा उन मामलों को छोड़ देंगे जहां द्विपक्षीय प्रतिबद्धताएं हावी होती हैं।

निहितार्थ

- **करदाताओं के लिए** :
  - संधि प्रावधानों की व्याख्या में अधिक स्पष्टता।
  - चुनिंदा संधियों के अंतर्गत पूर्वानुमेय लाभ प्राप्त करने वाली संस्थाओं के लिए आश्वासन।

- **प्राधिकारियों के लिए:** संधि के दुरुपयोग से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र मॉडल टैक्स कन्वेंशन और अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ संरेखित।
- **वैश्विक संबंध:** पिछली प्रतिबद्धताओं का सम्मान करते हुए वैश्विक बीईपीएस मानकों के साथ भारत के अनुपालन को मजबूत करता है।

नोट:

साइप्रस, मॉरीशस और सिंगापुर के साथ संधियों को पहले से मौजूद द्विपक्षीय प्रतिबद्धताओं के कारण पीपीटी प्रावधानों से बाहर रखा गया है।

5 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

मानव मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी)

चर्चा में क्यों?

चीन इस समय ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के प्रकोप का सामना कर रहा है, जिसके कारण अस्पतालों, विशेषकर बाल चिकित्सा वार्डों में भीड़भाड़ हो रही है।

HMPV क्या है?

चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (HMPV) का प्रकोप है - यह एक ऐसा वायरस है जो ऊपरी और निचले श्वसन तंत्र में संक्रमण का कारण बनता है। यह सभी उम्र के लोगों को प्रभावित करता है, जिसमें छोटे बच्चे, बुजुर्ग और कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग शामिल हैं। इस वायरस की पहली बार पहचान 2001 में हुई थी।

HMPV के लक्षण

- खाँसी
- बुखार
- नाक का बंद होना
- सांस लेने में कठिनाई

गंभीर मामलों में, एचएमपीवी ब्रोंकाइटिस या निमोनिया जैसी जटिलताएं पैदा कर सकता है।

HMPV का संचरण

- खांसने और छींकने से निकलने वाली बूंदों के माध्यम से फैलता है।
- निकट व्यक्तिगत संपर्क, जैसे हाथ मिलाना।
- दूषित सतहों के संपर्क में आने के बाद मुंह, नाक या आंख को छूना।

निवारक उपायों में कम से कम 20 सेकंड तक साबुन और पानी से हाथ धोना और चेहरे को छूने से बचना शामिल है।

जोखिमग्रस्त समूह

- छोटे बच्चे
- वृद्ध वयस्क
- कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग

यदि लक्षण कुछ दिनों के बाद भी बने रहते हैं या बिगड़ जाते हैं, या बुखार तीन दिनों से अधिक समय तक बना रहता है और कोई सुधार नहीं होता है, तो चिकित्सीय सहायता लेने की सलाह दी जाती है।

नमो भारत रैपिड रेल

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नमो भारत रैपिड रेल के साहिबाबाद-न्यू अशोक नगर खंड का उद्घाटन किया, जिससे 55 किलोमीटर लंबे परिचालन गलियारे के साथ दिल्ली-मेरठ संपर्क बढ़ गया।

नमो भारत ट्रेनों के बारे में

- दिल्ली और मेरठ को जोड़ने वाली भारत की पहली क्षेत्रीय रैपिड ट्रेन का नाम "नमो भारत" है।
- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने क्षेत्रीय तीव्र पारगमन प्रणाली (आरआरटीएस) विकसित की है, जिसे नमो भारत भी कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं?

- एनसीआरटीसी केन्द्र सरकार तथा दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य सरकारों के बीच एक संयुक्त उद्यम है।
- आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के अधीन कार्यरत इसका अधिदेश राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आरआरटीएस परियोजना को क्रियान्वित करना है।

नमो भारत ट्रेनों की मुख्य विशेषताएं

- 160 किमी/घंटा तक की गति प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया ।
- एक समर्पित ट्रैक पर संचालित होता है।
- प्रत्येक 5 से 10 मिनट में उच्च आवृत्ति सेवा प्रदान करता है।

क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस)

परिचय: यह अर्ध-उच्च गति, एकीकृत जन परिवहन नेटवर्क है, जिसका उद्देश्य एनसीआर में कनेक्टिविटी सुधारना और सतत शहरी विकास को बढ़ावा देना है।

मूल:

- 1998-99 में भारतीय रेलवे ने एनसीआर कस्बों को तेज यात्री रेलगाड़ियों से जोड़ने का प्रस्ताव दिया।
- 2006 में दिल्ली मेट्रो के विस्तार के साथ इसका पुनर्मूल्यांकन हुआ।
- एनसीआरपीबी ने 2032 की परिवहन योजना में 8 आरआरटीएस कॉरिडोर की सिफारिश की।

विशेषताएँ:

- **गति:** 160-180 किमी/घंटा
- **प्रेरणा:** फ्रांस (RER), जर्मनी (Regional Express), अमेरिका (SEPTA)
- मेट्रो से तेज, कुशल और आरामदायक यात्रा प्रदान करता है।

भारत का पहला ग्लास ब्रिज

चर्चा में क्यों?

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने हाल ही में समुद्र पर भारत के पहले ग्लास ब्रिज का अनावरण किया, जो कन्याकुमारी में तिरुवल्लुवर प्रतिमा को विवेकानंद रॉक मेमोरियल से जोड़ेगा।

तिरुवल्लुवर प्रतिमा को विवेकानंद रॉक मेमोरियल से जोड़ने वाला ग्लास ब्रिज

पुल की मुख्य विशेषताएं

- **आयाम:** 77 मीटर लंबा और 10 मीटर चौड़ा, समुद्र का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है।
- **उन्नत अनुभव:** एक पैदल यात्री पुल जो ऐतिहासिक स्थलों के बीच नौका यात्रा की आवश्यकता को समाप्त कर देगा।
- **निवेश:** 37 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित, कन्याकुमारी के पर्यटन बुनियादी ढांचे को बढ़ावा मिलेगा।
- **दृष्टि:** पर्यटन को बढ़ाने और स्थानीय सुविधाओं को आधुनिक बनाने के प्रयासों के साथ संरेखित।
- **स्थायित्व:** समुद्री परिस्थितियों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किया गया, जो सुरक्षा और दीर्घायु सुनिश्चित करता है।
- **आकर्षण:** दो स्मारकों के बीच एक सुंदर, सुरक्षित मार्ग प्रदान करने वाला एक नया स्थल।

तिरुवल्लुवर प्रतिमा के बारे में

- यह मंदिर तमिलनाडु के कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक मेमोरियल के पास एक चट्टान पर स्थित है।
- राज्य सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर इसका नाम "बुद्धि की प्रतिमा" रखा गया।
- **ऊंचाई:** कुल ऊंचाई 133 फीट (41 मीटर) है, जिसमें आधार भी शामिल है, जिसमें प्रतिमा स्वयं 95 फीट (29 मीटर) और आधार 38 फीट (12 मीटर) है।
- **वजन:** प्रतिमा का वजन 7000 टन है।
- **रचना:** मूर्तिकार वी. गणपति स्थपति द्वारा भारतीय स्थापत्य शैली में निर्मित, खोखला आंतरिक भाग।
- **उद्घाटन:** 1 जनवरी 2000 को तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा अनावरण किया गया।

विवेकानंद रॉक मेमोरियल के बारे में

- कन्याकुमारी में मुख्य भूमि से 500 मीटर दूर, समुद्र में एक चट्टान पर स्थित है।
- इसका निर्माण 1970 में स्वामी विवेकानंद के सम्मान में किया गया था, जिन्होंने 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में भारत की आध्यात्मिक विरासत का प्रतिनिधित्व किया था।
- ऐसा माना जाता है कि यह चट्टान विवेकानंद के ज्ञान प्राप्ति का स्थान है।
- यह देवी कन्याकुमारी की भगवान शिव से की गई प्रार्थना से भी जुड़ा है, तथा इस चट्टान पर उनके पदचिह्न संरक्षित हैं।
- स्मारक में श्रीपद मंडपम और विवेकानंद मंडपम सहित विभिन्न स्थापत्य शैलियों का मिश्रण है।
- स्मारक पर स्वामी विवेकानंद की आदमकद कांस्य प्रतिमा स्थापित है।
- यह चट्टान लक्षद्वीप सागर से घिरी हुई है, जहां बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर मिलते हैं।

H5N1 बर्ड फ्लू

चर्चा में क्यों ?

लुइसियाना के एक 65 वर्ष से अधिक आयु के निवासी, जो पहले से स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त थे, की H5N1 बर्ड फ्लू से मृत्यु हो गई है। यह घटना संयुक्त राज्य अमेरिका में 2025 में इस वायरस से संबंधित पहली मानव मृत्यु है। व्यक्ति ने संक्रमित पक्षियों के संपर्क में आने के बाद यह संक्रमण प्राप्त किया था।

H5N1 बर्ड फ्लू क्या है ?

- H5N1, या एवियन इन्फ्लूएंजा ए (H5N1), एक अत्यधिक रोगजनक वायरस है जो मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है, लेकिन स्तनधारियों को भी संक्रमित करने में सक्षम है।
- इसकी उत्पत्ति 1996 में चीन में हुई और यह तेजी से एक अत्यधिक रोगजनक प्रजाति के रूप में विकसित हो गयी।
- 2020 से यह यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उत्तर और दक्षिण अमेरिका और अंटार्कटिका में फैल चुका है।
- भारत में इसका पहला प्रकोप 2015 में महाराष्ट्र और गुजरात में सामने आया था।

पशुओं पर प्रभाव

- कैलिफोर्निया कोंडोर्स जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों सहित जंगली पक्षी गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं।
- पहले के प्रकोपों में मुर्गियां ही मुख्य रूप से प्रभावित प्रजातियां थीं।
- समुद्री स्तनधारी जीव, जैसे समुद्री शेर और डॉल्फिन, विशेष रूप से चिली और पेरू में बड़े पैमाने पर मारे गए हैं।
- लोमड़ियाँ, प्यूमा, भालू (उत्तरी अमेरिका) और फार्म में पाले गए मिंक (स्पेन, फिनलैंड) जैसे स्तनधारी भी संक्रमित हो गए हैं।

मानवीय जोखिम और प्रसार कारक

- H5N1 से मानव संक्रमण दुर्लभ है और आमतौर पर संक्रमित पक्षियों के संपर्क के माध्यम से होता है।
- जलवायु परिवर्तन से पक्षियों के व्यवहार और प्रजातियों के बीच परस्पर क्रिया में परिवर्तन होने से वायरस का प्रसार बढ़ सकता है।

WHO द्वारा जोखिम मूल्यांकन

- यह वायरस आसानी से मनुष्यों को संक्रमित नहीं करता, लेकिन मुर्गीपालन से जुड़े छिटपुट मामले सामने आते हैं।
- मानव-से-मानव में संक्रमण दुर्लभ है, लेकिन संभव है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां मुर्गीपालन का प्रकोप व्यापक है।
- WHO इसे आम जनता के लिए कम जोखिम वाला मानता है, लेकिन सतत निगरानी और जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर देता है।

निवारक उपाय और सिफारिशें

- जीवित पशुओं के बाजार जैसे उच्च जोखिम वाले वातावरण से बचें और हाथों की अच्छी स्वच्छता बनाए रखें।
- बीमार पशुओं की सूचना दें और बीमार मुर्गी पालन से बचें।
- संक्रमित पक्षियों या वातावरण के संपर्क में आने पर तुरंत चिकित्सा सहायता लें।

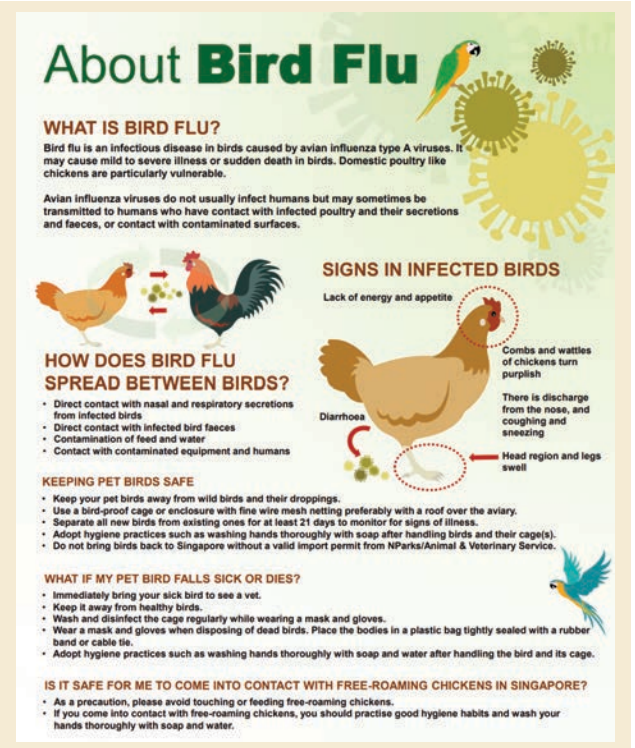

जेड- मोड़ सुरंग

चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले में ज़-मोर्ह सुरंग का उद्घाटन करने के लिए जाने वाले हैं। यह बुनियादी ढांचा परियोजना कश्मीर और लद्दाख के बीच सड़क संपर्क को बेहतर बनाएगी, जिससे पर्यटन और भारतीय सैन्य बलों—दोनों को लाभ मिलेगा।

ज़ेड-मोड़ सुरंग: मुख्य तथ्य

- **स्थान** : जम्मू और कश्मीर के गंदेरबल जिले में 6.4 किमी लंबी सुरंग, जो श्रीनगर-लेह राजमार्ग के साथ सोनमर्ग को सभी मौसम में संपर्क प्रदान करती है।
- **उद्देश्य** : प्रमुख पर्यटन स्थल सोनमर्ग तक वर्ष भर पहुंच सुनिश्चित करना तथा लद्दाख से संपर्क में सुधार करना।
- **निर्माण**
  - इसकी योजना सर्वप्रथम सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा 2012 में बनाई गई थी।
  - बाद में राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (एनएचआईडीसीएल) द्वारा इसे एक निजी कंपनी को पुन: सौंप दिया गया।
- **सामरिक महत्व**
  - यह बर्फ़बारी-प्रवण क्षेत्र में स्थित है, जो कठोर सर्दियों के दौरान सड़क मार्ग से पहुंच सुनिश्चित करता है।
  - यह जोजिला सुरंग परियोजना का एक हिस्सा है, जो लद्दाख तक सभी मौसम में कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण है।
  - यह रक्षा तैयारियों के लिए पाकिस्तान और पूर्वी लद्दाख के निकट सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य कर्मियों और आपूर्ति की त्वरित आवाजाही की सुविधा प्रदान करता है।
- **महत्व**
  - क्षेत्रीय पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।
  - रणनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में भारतीय रक्षा बलों के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करता है।

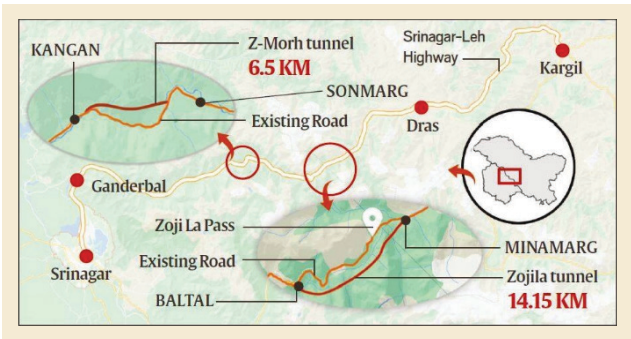

- **सीमा सड़क संगठन (बीआरओ)**: 1960 में स्थापित, बीआरओ भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क बुनियादी ढांचे के विकास और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है, जो रणनीतिक और विकासात्मक उद्देश्यों के लिए चुनौतीपूर्ण इलाकों में कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (एनएचआईडीसीएल)**: 2014 में स्थापित, एनएचआईडीसीएल एक सरकारी इकाई है जिसका कार्य पहाड़ी, सीमावर्ती और दूरदराज के क्षेत्रों में राजमार्गों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण और प्रबंधन करना है ताकि कनेक्टिविटी बढ़ाई जा सके और राष्ट्रीय विकास को समर्थन दिया जा सके।

भारत ने उत्कर्ष का शुभारंभ किया

चर्चा में क्यों?

मेसर्स एलएंडटी शिपयार्ड द्वारा निर्मित भारतीय नौसेना के दूसरे बहुउद्देश्यीय पोत (एमपीवी) को चेन्नई के कट्टुपल्ली स्थित उनके संयंत्र में आधिकारिक रूप से लॉन्च किया गया। इस समारोह में रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह के साथ-साथ नौसेना के उच्च अधिकारी भी मौजूद थे।

उत्कर्ष - बहुउद्देश्यीय जहाज

उत्कर्ष के बारे में

- जहाज का नाम 'उत्कर्ष' रखा गया, जिसका अर्थ है 'आचरण में श्रेष्ठ', जिसे लॉन्च किया गया, जो इसके लिए परिकल्पित बहुमुखी भूमिकाओं के साथ इसके संरेखण को दर्शाता है।
- इन बहुउद्देशीय जहाजों को विभिन्न लक्ष्यों को प्रक्षेपित करने ,जहाजों को खींचने, और पुन: प्राप्त करने, मानवरहित स्वायत्त वाहनों को संचालित करने तथा विकास के तहत स्वदेशी हथियारों और सेंसरों के लिए परीक्षण मंच के रूप में कार्य करने के लिए निर्माण किया गया है।

उत्कर्ष पर मुख्य बिंदु - बहुउद्देश्यीय पोत (एमपीवी)

- **निर्माता** : चेन्नई के कट्टुपल्ली में मेसर्स एलएंडटी शिपयार्ड द्वारा निर्मित।
- **लॉन्च कार्यक्रम** : रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह और वरिष्ठ नौसेना अधिकारियों ने भाग लिया।

विशेषताएँ

- **जहाजों को खींचना** : पुन: स्थिति निर्धारण, बचाव और मरम्मत कार्यों में सहायता करना।
- **लक्ष्य संचालन** : प्रशिक्षण और परीक्षण के लिए विभिन्न लक्ष्यों को प्रक्षेपित करना और पुन: प्राप्त करना।
- **मानवरहित वाहन** : निगरानी और अन्वेषण के लिए स्वायत्त वाहनों का संचालन करता है।
- **परीक्षण मंच** : स्वदेशी हथियारों और सेंसरों के लिए परीक्षण मंच के रूप में कार्य करता है।

महत्व

- भारतीय नौसेना की परिचालनात्मक लचीलापन को बढ़ाता है।
- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए आत्मनिर्भर भारत पहल का समर्थन करता है।
- समुद्री सुरक्षा और भारत की नौसैनिक उपस्थिति को मजबूत करता है।

इसरो का अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग

चर्चा में क्यों ?

भारत ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, क्योंकि इसरो ने अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को सफलतापूर्वक डॉक किया है, जिससे यह उपलब्धि हासिल करने वाला भारत दुनिया का चौथा देश बन गया है। इससे पहले यह उपलब्धि संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद हासिल की गई है।

स्पेडेक्स मिशन: मुख्य विशेषताएं

अवलोकन

- **मिशन का नाम:** स्पैडेक्स (अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग)
- **लॉन्च की तिथि:** 30 दिसंबर, 2024
- **लॉन्च स्थल:** सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा
- **उपग्रह:** SDX01 (चेज़र) और SDX02 (लक्ष्य)
- **उद्देश्य:** अंतरिक्ष यान के मिलन, डॉकिंग और अनडॉकिंग तकनीकों का परीक्षण और प्रदर्शन करना।

हाल की खबर

- 12 जनवरी, 2025 को, इसरो ने उपग्रहों को एक दूसरे से 3 मीटर की दूरी पर ले जाकर सुरक्षित दूरी पर वापस लौटा दिया।
- पूर्ण डॉकिंग प्रयोग करने से पहले डेटा विश्लेषण किया जा रहा है।

महत्व

- यह डॉकिंग प्रयोग भारत के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, जो जटिल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों में भारत के प्रवेश को चिह्नित करता है,
  - मानवयुक्त चंद्र मिशन, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर भेजना शामिल है।
  - उन्नत ग्रह अन्वेषण का मार्ग प्रशस्त करता है।
  - भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का विकास, अंतरिक्ष में स्वतंत्र संचालन के लिए एक दीर्घकालिक लक्ष्य।

यदि यह मिशन सफल रहा तो भारत को अंतरिक्ष में उपग्रह डॉकिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बना देगा - जो अमेरिका, रूस और चीन के साथ जुड़ जाएगा - जो अंतरिक्ष अन्वेषण में अभिजात वर्ग के बीच इसरो के स्थान की पुष्टि करेगा।

भार्गवस्त्र माइक्रो मिसाइल

चर्चा में क्यों ?

भारत ने स्वदेश में विकसित पहली भार्गवस्त्र माइक्रो मिसाइल प्रणाली के सफल परीक्षण के साथ रक्षा प्रौद्योगिकी में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है, जिसका उद्देश्य ड्रोन खतरों का मुकाबला करना है।

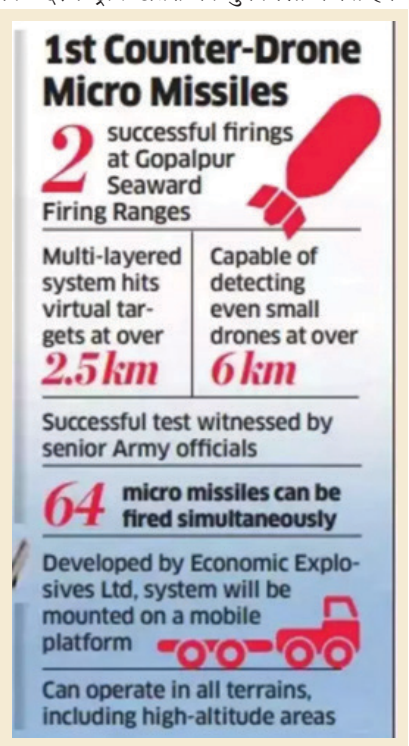

भार्गवस्त्र: भारत का स्वदेशी एंटी-ड्रोन माइक्रो-मिसाइल सिस्टम

- भार्गवस्त्र भारत की पहली माइक्रो-मिसाइल आधारित प्रणाली है जिसे झुंड ड्रोनों का मुकाबला करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इकोनॉमिक एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड द्वारा विकसित यह मिसाइल 6 किमी से अधिक दूरी पर छोटे ड्रोन का पता लगाकर उन्हें निष्क्रिय कर सकती है।
- यह विमान मुख्य रूप से भारतीय सेना के लिए बनाया गया है, हालांकि भारतीय वायु सेना ने भी इसमें रुचि दिखाई है।

भारत ने माइक्रो मिसाइल भार्गवस्त्र का परीक्षण किया

प्रमुख विशेषताएँ

- **आधिकारिक सीमा** : 6 किमी से आगे ड्रोन को देख सकता है।
- **निष्प्रभावीकरण** : ड्रोन को नष्ट करने के लिए निर्देशित सूक्ष्म मिसाइलों का उपयोग करता है।
- **एक साथ प्रक्षेपण** : एक बार में 64 माइक्रो मिसाइलों का प्रक्षेपण।
- **मोबाइल प्लेटफॉर्म** : विभिन्न भूभागों पर शीघ्रता से तैनात किया जा सकता है।
- **बहुमुखी** : सैन्य उपयोग के लिए विभिन्न वातावरणों में प्रभावी।

आईएनएस मुंबई

चर्चा में क्यों ?

भारतीय नौसेना के जहाज मुंबई ने फ्रांस के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय ला-पेरोस अभ्यास में भाग लिया, जिसमें आठ अन्य देशों - भारत, अमेरिका, कनाडा, मलेशिया, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और सिंगापुर - ने भी भाग लिया।

भारतीय नौसेना जहाज मुंबई

आईएनएस मुंबई: महत्वपूर्ण जानकारी

आईएनएस मुंबई स्वदेशी तकनीक से निर्मित तीसरा दिल्ली श्रेणी का निर्देशित मिसाइल विध्वंसक है, जिसे 22 जनवरी, 2001 को मुंबई के मझगांव डॉक लिमिटेड में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था। इस जहाज ने कई पुरस्कार जीते हैं, जिसमें तीन बार 'सर्वश्रेष्ठ जहाज' और दो बार 'सबसे उत्साही जहाज' का खिताब शामिल है।

इसने ऑपरेशन पराक्रम (2002), ऑपरेशन सुकून (2006) और ऑपरेशन राहत (2015) जैसे प्रमुख अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जहाज को मध्य-जीवन उन्नयन से गुजरना पड़ा और 8 दिसंबर, 2023 को विशाखापत्तनम में पूर्वी नौसेना कमान में शामिल हो गया।

प्रमुख विशेषताएँ

- **विस्थापन** : 6500 टन से अधिक, 350 नाविक और 40 अधिकारी संचालित।
- **आयाम** : लंबाई में 163 मीटर और चौड़ाई में 17 मीटर, 32 नॉट से अधिक गति में सक्षम।
- **शस्त्र प्रणाली:** शक्तिशाली मारक क्षमता के लिए सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलों, सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, पनडुब्बी रोधी रॉकेटों और टारपीडो से सुसज्जित।
- **हेलीकॉप्टर संचालन** : सभी प्रकार के नौसैनिक हेलीकॉप्टरों का संचालन कर सकता है, जिससे इसकी परिचालन क्षमता बढ़ जाती है।

संजय - युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली

चर्चा में क्यों ?

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने हाल ही में साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली से 'संजय - युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली (बीएसएस)' का शुभारंभ किया।

संजय - युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली

संजय - युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली (बीएसएस)

अवलोकन

- एक स्वचालित प्रणाली जो सुरक्षित नेटवर्क पर एक सामान्य निगरानी चित्र बनाने के लिए जमीनी और हवाई सेंसरों को एकीकृत करती है।

प्रमुख विशेषताएं

- **उन्नत सेंसर और एनालिटिक्स** : सीमाओं की निगरानी करता है, घुसपैठ को रोकता है, और स्थितिजन्य जागरूकता को बढ़ाता है।
- **नेटवर्क-केंद्रित** : पारंपरिक और उप-पारंपरिक परिचालनों के लिए वास्तविक समय इनपुट प्रदान करता है।
- **स्वदेशी विकास** : भारतीय सेना और बीईएल द्वारा संयुक्त रूप से विकसित, 'आत्मनिर्भरता' का समर्थन।
- **चरणबद्ध प्रेरण** : तीन चरणों में ब्रिगेड, डिवीजनों और कोर में तैनाती (मार्च-अक्टूबर 2025)।

महत्व

- युद्धक्षेत्र में पारदर्शिता बढ़ाता है, निर्णय लेने में सहायता करता है, तथा सैन्य अभियानों का आधुनिकीकरण करता है।
- रक्षा मंत्रालय में 'सुधार वर्ष' के अनुरूप, 2,402 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया गया ।

इसरो ने 100 वां प्रक्षेपण पूरा किया

चर्चा में क्यों ?

जीएसएलवी-एफ15 रॉकेट के सफल प्रक्षेपण के साथ, इसरो ने एनवीएस-02 उपग्रह को भूस्थिर स्थानांतरण कक्षा (जीटीओ) में स्थापित कर दिया, जिससे उसका 100वां मिशन पूरा हुआ और भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं को मजबूती मिली।

श्रीहरिकोटा से ऐतिहासिक 100 वां मिशन

इसरो के प्रक्षेपण यान

प्रक्षेपण यान क्या हैं ?

- रॉकेट-संचालित प्रणालियाँ जो उपग्रहों या पेलोड को अंतरिक्ष या उससे परे ले जाती हैं।
- गुरुत्वाकर्षण पर काबू पाने और LEO, GEO, या अंतरग्रहीय पथ जैसी कक्षाओं तक पहुंचने के लिए बल प्रदान करना।

प्रक्षेपण वाहन कैसे काम करते हैं ?

- **रॉकेट प्रणोदन:** ठोस या तरल ईंधन का उपयोग करके न्यूटन के तीसरे नियम का पालन करता है।
- **अनेक चरण:** प्रत्येक चरण अपना ईंधन जलाने के बाद अलग हो जाता है।
- **मार्गदर्शन एवं नेविगेशन:** कंप्यूटर वांछित उड़ान पथ को बनाए रखते हैं।
- **पेलोड फेयरिंग:** उपग्रह की सुरक्षा करता है और अंतरिक्ष में अलग कर देता है।
- **कक्षा सम्मिलन:** अंतिम चरण उपग्रह को कक्षा में स्थापित करता है।

इसरो के परिचालन प्रक्षेपण यान

लॉन्च वाहन	साल	मुख्य विशेषताएं
एसएलवी (सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)	1980	भारत का पहला रॉकेट, 4-चरण ठोस ईंधन आधारित, रोहिणी उपग्रह का सफल प्रक्षेपण।
एएसएलवी (ऑगमेंटेड सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)	1987	5-चरण ठोस ईंधन आधारित, एसएलवी की क्षमता में सुधार, 1990 के दशक में सेवानिवृत्त।
पीएसएलवी (पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)	1994	4-चरण वाहन, भारत का प्रमुख प्रक्षेपण यान, मंगलयान का प्रक्षेपण किया, 1,750 किग्रा पेलोड को एलईओ तक ले जाता है।
जीएसएलवी (जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)	2001	3-चरण, क्रायोजेनिक ऊपरी चरण का उपयोग, आईएनएसएटी और जीसैट उपग्रहों का प्रक्षेपण।
जीएसएलवी एमके III (एलवीएम3)	2014	भारी पेलोड वाहन, चंद्रयान-2 और चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण किया, 4,000 किग्रा पेलोड क्षमता जीटीओ तक।
एसएसएलवी (स्मॉल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल)	2022	कम लागत वाला 3-चरण रॉकेट, नैनो और माइक्रो उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए उपयुक्त।

एनवीएस-02 उपग्रह

एनवीएस-02 उपग्रह

एनवीएस-02 क्या है ?

- नाविक (भारतीय नक्षत्र के साथ नेविगेशन) के अंतर्गत नेविगेशन उपग्रह।
- एनवीएस श्रृंखला में दूसरा, पुराने आईआरएनएसएस उपग्रहों की जगह लेगा।

कक्षीय प्लेसमेंट

- जीएसएलवी-एफ15 द्वारा भू-समकालिक स्थानांतरण कक्षा (जीटीओ) में प्रक्षेपित किया गया।
- **अंतिम कक्षा:** 36,000 किमी ऊँचाई।

उद्देश्य

- भारत और आस-पास के क्षेत्रों (1,500 किमी से आगे) में नेविगेशन सटीकता में सुधार करना।
- निम्नलिखित जैसे अनुप्रयोगों का समर्थन करता है:
  - सैन्य और नागरिक नेविगेशन
  - आपदा प्रबंधन
  - बेड़े की ट्रैकिंग और सटीक कृषि।

6 इतिहास

सुभाष चंद्र बोस और पराक्रम दिवस

चर्चा में क्यों ?

23 जनवरी, 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और अन्य नेताओं ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसे पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सुभाष चंद्र बोस कौन थे ?

- एक करिश्माई स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रवादी नेता, सुभाष चंद्र बोस ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- नेताजी के नाम से लोकप्रिय, वे दो बार (1938 और 1939) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।
- बाद में , तत्काल स्वतंत्रता प्राप्त करने के अपने अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोण को लेकर कांग्रेस के साथ मतभेद होने के बाद उन्होंने अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।

सुभाष चंद्र बोस क्यों पूजनीय हैं ?

- **राजनीतिक नेतृत्व :** बोस 1920-1930 के दशक के दौरान स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल रहे तथा कांग्रेस के चरणबद्ध दृष्टिकोण के विपरीत, पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की।
- **आज़ाद हिंद फौज का गठन :**
  - 1943 में , उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) को पुनर्गठित किया और उसका नेतृत्व किया, जिसमें युद्धबंदियों और दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवासी शामिल थे।
  - उन्होंने जापान के सहयोग से निर्वासन में आज़ाद हिंद सरकार भी बनाई।
- **जन एवं महिला लामबंदी :**
  - बोस ने विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों के भारतीयों को संगठित किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सम्पूर्ण भागीदारी पर बल दिया।
  - उन्होंने लैंगिक समानता में अपने विश्वास को दर्शाते हुए, एक पूर्ण महिला लड़ाकू बल, रानी झांसी रेजिमेंट का गठन किया।
- **युवा नेतृत्व :** बोस ने भारतीय युवाओं को प्रेरित किया तथा देश की स्वतंत्रता हासिल करने में उनकी भूमिका पर जोर दिया।
- **विदेशी राष्ट्रों के साथ कार्य :** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए जर्मनी और जापान से सहायता मांगी।

नेतृत्व के निहितार्थ

- नेताजी की क्रांतिकारी दृष्टि और रणनीतियों ने भारतीयों की कई पीढ़ियों को अपनी मातृभूमि के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।
- आई.एन.ए. के प्रयासों और बोस की एकता की अपील ने स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- पराक्रम दिवस मनाने से यह सुनिश्चित होता है कि उनकी विरासत आधुनिक भारत की आत्मनिर्भरता और लचीलेपन की खोज में एक मार्गदर्शक शक्ति बनी रहेगी।

कोणार्क सूर्य मंदिर

कोणार्क सूर्य मंदिर के बारे में

- **स्थान :** पुरी, ओडिशा के पास।
- **इसका निर्माण:** राजा नरसिंहदेव प्रथम ने 13वीं शताब्दी में (1238-1264 ई.) करवाया था, जो पूर्वी गंगा साम्राज्य के गौरव का प्रतिनिधित्व करता है।
- **पूर्वी गंगा राजवंश:** इन्हें रुधि गंग वंश के नाम से भी जाना जाता है, इन्होंने 5वीं से 15वीं शताब्दी तक कलिंग पर शासन किया।
- **डिजाइन:** यह एक विशाल रथ के आकार का है, जो सूर्य देवता को समर्पित है, तथा इसमें कलिंग वास्तुकला को दर्शाती जटिल मूर्तिकला का काम किया गया है।

कोणार्क सूर्य मंदिर

- **वास्तुकला:** कोणार्क सूर्य मंदिर विशिष्ट कलिंग प्रभाव के साथ नागर शैली की वास्तुकला का उदाहरण है।
- **प्रतीकात्मकता:** 24 पहिए दिन के घंटों या वर्ष के महीनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि 7 घोड़े सप्ताह के दिनों का प्रतीक हैं।
- **विरासत का दर्जा:** 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।
- **ऐतिहासिक महत्व:** नाविकों द्वारा कथित तौर पर जहाज़ों के डूबने का कारण बनने के कारण इसे "ब्लैक पैगोडा" के नाम से जाना जाता है, यह कश्मीर से पूर्वी भारत तक सूर्य पंथ के प्रसार को दर्शाता है।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, प्रधानमंत्री की ओर से सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की अजमेर शरीफ दरगाह पर 813वें उर्स के अवसर पर चादर पेश की गई।

सूफीवाद के बारे में मुख्य बातें

परिभाषा: सूफीवाद इस्लाम का एक रहस्यवादी रूप है जो भौतिकवाद को अस्वीकार करते हुए भक्ति, आंतरिक शुद्धता, तप और ईश्वर की आध्यात्मिक खोज पर जोर देता है।

- **मान्यताएं**
  - ईश्वर को जानने के लिए आत्म-अनुशासन आवश्यक है।
  - सूफ़ी लोग बाह्य आचरण की अपेक्षा आंतरिक पवित्रता पर ध्यान देते हैं।
  - मानवता की सेवा करना ईश्वर की सेवा के बराबर माना जाता है।
- **व्युत्पत्ति :** शब्द "सूफी" संभवत: 'सूफ' (अरबी में ऊन, क्योंकि तपस्वी ऊनी कपड़े पहनते थे) या 'सफा' (अरबी में पवित्रता) से आया है।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

- 1141-42 ई. में सिस्तान (ईरान) में जन्मे।
- तराइन के द्वितीय युद्ध (1192) के बाद मुइज़ुद्दीन मुहम्मद बिन साम के शासनकाल के दौरान अजमेर में बस गए।
- उन्होंने आध्यात्मिकता का प्रचार किया और अकबर और जहांगीर जैसे शासकों को अपने अनुयायी बनाया।
- अजमेर स्थित उनकी दरगाह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।

चिश्ती संप्रदाय

- **स्थापना**
  - भारत में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा प्रस्तुत किया गया।
  - ईश्वर के साथ एकता (वहदत अल-वुजूद) और शांतिवाद पर जोर दिया गया।
- **मान्यताएं**
  - भौतिक वस्तुओं को अस्वीकार कर दिया और राजनीतिक संबंधों से दूर रहे।
  - भगवान के नाम (धिक्र) का उच्चारण, जोर से और मन ही मन, दोनों तरह से किया।
- **प्रमुख शिष्य**
  - ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर, निज़ामुद्दीन औलिया और नसीरुद्दीन चराग ने शिक्षाओं को आगे बढ़ाया।

अन्य प्रमुख सूफी सिलसिला

- **सुहरावर्दी सिलसिला**
  - शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी द्वारा स्थापित।
  - चिश्तियों के विपरीत, शासकों से अनुदान स्वीकार किया।
- **नक्शबंदी सिलसिला**
  - ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंदी द्वारा स्थापित।
  - इस्लामी कानून (शरीयत) के सख्त पालन पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **कादिरिया सिलसिला**
  - पंजाब में लोकप्रिय, 14वीं शताब्दी में शेख अब्दुल कादिर द्वारा स्थापित।
  - अकबर के अधीन मुगल शासकों का समर्थन किया।

7 विश्व मामले

इंडोनेशिया पूर्ण सदस्य के रूप में ब्रिक्स में शामिल हुआ

चर्चा में क्यों ?

इंडोनेशिया आधिकारिक तौर पर ब्रिक्स का 11वां पूर्ण सदस्य बन गया है। यह घोषणा 2025 के लिए ब्रिक्स के अध्यक्ष ब्राजील द्वारा की गई।

प्रमुख बिंदु

इंडोनेशिया की सदस्यता: इंडोनेशिया ब्रिक्स में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल हो गया है, जिससे दक्षिण-पूर्व एशिया में समूह का प्रभाव बढ़ गया है। यह अब ब्रिक्स का हिस्सा बनने वाला 11वाँ देश है।

जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन में समर्थन: 2023 जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन के दौरान ब्रिक्स नेताओं द्वारा इंडोनेशिया की सदस्यता का आधिकारिक रूप से समर्थन किया गया।

ब्रिक्स: एक अवलोकन

ब्रिक्स क्या है ?

ब्रिक्स पांच प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है: ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका, जो वैश्विक राजनीति और अर्थशास्त्र में प्रभावशाली हैं।

- **गठन और विकास:** 2006 में "ब्रिक" के रूप में गठित, दक्षिण अफ्रीका 2010 में इसमें शामिल हुआ, जिससे ब्रिक्स का निर्माण हुआ।
- **उद्देश्य और लक्ष्य:** ब्रिक्स उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बेहतर प्रतिनिधित्व के लिए आर्थिक विकास, राजनीतिक सहयोग और वैश्विक संस्थागत सुधारों को बढ़ावा देता है।
- **आर्थिक महत्व:** ब्रिक्स का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 25% तथा विश्व की जनसंख्या में 40% योगदान है।
- **वार्षिक शिखर सम्मेलन:** आर्थिक सहयोग, व्यापार और सतत विकास पर चर्चा करने के लिए नेता प्रतिवर्ष मिलते हैं।
- **विकास पर ध्यान:** पारस्परिक विकास के लिए बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और नवाचार परियोजनाओं को बढ़ावा देना।
- **वैश्विक प्रभाव:** संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और आईएमएफ जैसी वैश्विक संस्थाओं में सुधार के लिए दबाव।
- **व्यापार और निवेश:** अंतर-ब्रिक्स व्यापार को प्रोत्साहित किया गया तथा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) की स्थापना की गई।
- **राजनीतिक सहयोग:** जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे वैश्विक मुद्दों को बातचीत के माध्यम से संबोधित करता है।

ब्रिक्स की उपलब्धियां

- **2006:** सेंट पीटर्सबर्ग में रूस, भारत और चीन के बीच बैठक के बाद शुरू किया गया।
- **2009:** रूस के येकातेरिनबर्ग में इसका उद्घाटन शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।
- **2010:** ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान दक्षिण अफ्रीका को इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया, जिससे इसका औपचारिक विस्तार हुआ।
- **2011:** दक्षिण अफ्रीका ने चीन के सान्या में तीसरे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में आधिकारिक रूप से भाग लिया।
- **2024:** ब्रिक्स ने नए सदस्यों - मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब (सदस्यता लंबित) और यूएई को शामिल करने की घोषणा की - जो इसके निरंतर विकास का संकेत है।

8 विविध

पुरस्कार

82वें वार्षिक गोल्डन ग्लोब पुरस्कार

चर्चा में क्यों ?

82वें वार्षिक गोल्डन ग्लोब पुरस्कार समारोह का आयोजन 5 जनवरी, 2025 को कैलिफोर्निया के बेवर्ली हिल्टन में किया जाएगा, जिसमें फिल्म और टेलीविजन में असाधारण उपलब्धियों को सम्मानित किया जाएगा।

2025 गोल्डन ग्लोब पुरस्कार विजेता

वर्ग	विजेताओं
• मोशन पिक्चर में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का प्रदर्शन - ड्रामा	• एड्रियन ब्रॉडी, "द ब्रूटलिस्ट"
• मोशन पिक्चर में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का प्रदर्शन - ड्रामा	• फर्नांडा टोरेस, "मैं अभी भी यहाँ हूँ"
• सर्वश्रेष्ठ मोशन पिक्चर - ड्रामा	• "द ब्रूटलिस्ट"
• किसी भी मोशन पिक्चर में सहायक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का प्रदर्शन	• ज़ो सलदाना, "एमिलिया पेरेज़"
• किसी भी मोशन पिक्चर में सहायक भूमिका में एक अभिनेता द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	• किरन कल्किन, "ए रियल पेन"
• टेलीविज़न सीरीज़ में किसी अभिनेत्री द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन - संगीतमय या हास्य	• जीन स्मार्ट, "हैक्स"
• टेलीविज़न सीरीज़ में एक अभिनेता द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन - ड्रामा	• हिरोयुकी सनाडा, "शोगुन"
• सर्वश्रेष्ठ पटकथा - मोशन पिक्चर	• पीटर स्ट्रॉघन, "कॉन्क्लेव"
• सर्वश्रेष्ठ मूल गीत - मोशन पिक्चर	• "एल माल," क्लेमेंट डुकोल, केमिली और जैक्स ऑयार्ड द्वारा ("एमिलिया पेरेज़" से)
• सर्वश्रेष्ठ मोशन पिक्चर - गैर-अंग्रेजी भाषा	• "एमिलिया पेरेज़"
• सर्वश्रेष्ठ निर्देशक - मोशन पिक्चर	• ब्रैडी कॉर्बेट, "द ब्रूटलिस्ट"
• सर्वश्रेष्ठ मोशन पिक्चर - एनिमेटेड	• "प्रवाह"
• सर्वश्रेष्ठ टेलीविज़न सीरीज़ - ड्रामा	• "शोगुन"
• टेलीविज़न सीरीज़ में किसी अभिनेता द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन - संगीतमय या हास्य	• जेरेमी एलन व्हाइट, "द बियर"
• सर्वश्रेष्ठ टेलीविज़न सीरीज़ - कॉमेडी या म्यूज़िकल	• "हैक्स"
• टेलीविज़न के लिए बनाई गई सीमित श्रृंखला, एंथोलॉजी श्रृंखला या मोशन पिक्चर में किसी अभिनेत्री द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	• जोडी फोस्टर, "ट्रू डिटेक्टिव: नाइट कंट्री"
• टेलीविज़न के लिए बनी सर्वश्रेष्ठ टेलीविज़न लिमिटेड सीरीज़, एंथोलॉजी सीरीज़ या मोशन पिक्चर	• "शिशु बारहसिंगा"

राष्ट्रीय खेल पुरस्कार 2024

चर्चा में क्यों?

हाल ही में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने खेलों में उल्लेखनीय योगदान के लिए असाधारण एथलीटों, प्रशिक्षकों, विश्वविद्यालयों और संगठनों को सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय खेल पुरस्कार प्रदान किए।

मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार 2024

प्राप्तकर्ता	अनुशासन
श्री गुकेश डी	शतरंज
श्री हरमनप्रीत सिंह	हॉकी
श्री प्रवीण कुमार	पैरा एथलेटिक्स
सुश्री मनु भाकर	शूटिंग

खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अर्जुन पुरस्कार 2024

प्राप्तकर्ता का नाम	खेल का क्षेत्र
श्रीमती ज्योति याराजी	एथलेटिक्स
श्रीमती अन्नू रानी	एथलेटिक्स
श्रीमती नीति	बॉक्सिंग
श्रीमती सवीटी	बॉक्सिंग
श्रीमती वंतिका अग्रवाल	शतरंज
श्रीमती सलिमा टेटे	हॉकी
श्री अभिषेक	हॉकी
श्री संजय	हॉकी
श्री जर्मनप्रीत सिंह	हॉकी
श्री सुखजीत सिंह	हॉकी
श्री राकेश कुमार	पैराओर्चरी
श्रीमती प्रीति पाल	पैराओथलेटिक्स
श्रीमती जीवनजी दीपथी	पैराओथलेटिक्स
श्री अजीत सिंह	पैराओथलेटिक्स
श्री सचिन सरजेराव खीलेरी	पैराओथलेटिक्स
श्री धर्मबीर	पैराओथलेटिक्स
श्री प्रणव सुमर	पैराओथलेटिक्स
श्री एच होकाटो सेमा	पैराओथलेटिक्स
श्रीमती सिमरन	पैराओथलेटिक्स
श्री नवदीप	पैराओथलेटिक्स
श्री नितेश कुमार	पैराबैडमिंटन
श्रीमती थुलसिमाथी मुरुगेसन	पैराबैडमिंटन
श्रीमती निथ्या श्री सुमथी शिवन	पैराबैडमिंटन
श्री साजन प्रकाश	स्विमिंग
श्री अमन	कुश्ती
श्रीमती मनीषा रामदास	पैराबैडमिंटन
श्री कपिल परमार	पैराजूडो
श्रीमती मोना अग्रवाल	पैराशूटिंग
श्रीमती रुबिना फ्रांसीस	पैराशूटिंग
श्री स्वप्निल सुरेश कुसले	शूटिंग
श्री सरबजोत सिंह	शूटिंग
श्री अभय सिंह	स्क्वॉश

खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अर्जुन पुरस्कार 2024

प्राप्तकर्ता	अनुशासन
श्री सुच्चा सिंह	व्यायाम
श्री मुरलीकांत राजाराम पेटकर	पैरा-तैराकी

खेल और खेलों में उत्कृष्ट प्रशिक्षकों के लिए द्रोणाचार्य पुरस्कार 2024

प्राप्तकर्ता का नाम	खेल का क्षेत्र
श्री सुबाश राणा	पैरा-शूटिंग
श्रीमती दीपाली देशपांडे	शूटिंग
श्री संदीप सांगवान	हॉकी
श्री एस मुरलीधरन	बैडमिंटन
श्री आर्मंडो अग्नेलो कोलाको	फुटबॉल

राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार

प्राप्तकर्ता: फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (एमएकेए) ट्रॉफी 2024

स्थान	विश्वविद्यालय का नाम
कुल विजेता विश्वविद्यालय	चंडीगढ़ विश्वविद्यालय
1st रनर-अप विश्वविद्यालय	लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, पंजाब
2nd रनर-अप विश्वविद्यालय	गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

राष्ट्रीय खेल पुरस्कार

- **मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार** सर्वोच्च खेल सम्मान है, जो व्यक्तियों को खेल में उनकी असाधारण उपलब्धियों और उत्कृष्टता के लिए दिया जाता है।
- **अर्जुन पुरस्कार** उन एथलीटों को दिया जाता है जो उत्कृष्ट प्रदर्शन, नेतृत्व, अनुशासन और खेल कौशल का प्रदर्शन करते हैं।
- **अर्जुन पुरस्कार (आजीवन)** उन सेवानिवृत्त एथलीटों को दिया जाता है जो खेल विकास में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहते हैं।
- **द्रोणाचार्य पुरस्कार** उन प्रशिक्षकों को दिया जाता है जो खिलाड़ियों को लगातार मार्गदर्शन देते हैं, जिससे वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त कर सकें।
- **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (एमएकेए) ट्रॉफी** खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले विश्वविद्यालयों को मान्यता देती है।

समाचार पुरस्कार में

व्यक्तित्व	विवरण	पुरस्कार	चर्चा में क्यों?
जसप्रीत बुमराह	भारतीय क्रिकेटर	आईसीसी पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर पुरस्कार	जसप्रीत बुमराह को पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उनके असाधारण प्रदर्शन और योगदान के लिए प्रतिष्ठित ICC पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सभी प्रारूपों में उनकी निरंतर उत्कृष्टता ने उन्हें दुनिया के अग्रणी गेंदबाजों में से एक के रूप में स्थापित किया है।
मानुष शाह और दीया चितले	टेबल टेनिस खिलाड़ी	2025 सीनियर राष्ट्रीय टेबल टेनिस चैंपियनशिप	2025 सीनियर नेशनल टेबल टेनिस चैंपियनशिप का समापन 26 जनवरी को सूरत के पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में हुआ। मानुष शाह ने पुरुष एकल वर्ग का खिताब जीता, जबकि दीया चितले ने महिला वर्ग में जीत हासिल की। दोनों ने पूरे टूर्नामेंट में उल्लेखनीय प्रतिभा और दृढ़ता का प्रदर्शन किया।

समाचार में रोग

मलेरिया मुक्त प्रमाणन

चर्चा में क्यों?

जॉर्जिया को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मलेरिया मुक्त प्रमाणित किया गया है, इस उपलब्धि को प्राप्त करने वाले 45 देश और एक क्षेत्र शामिल हो गए हैं। दशकों के समर्पित हस्तक्षेपों के बाद मलेरिया उन्मूलन की दिशा में वैश्विक प्रयासों में यह एक बड़ी सफलता है।

डब्ल्यूएचओ द्वारा मलेरिया उन्मूलन प्रमाणन

- **प्रमाणन प्रक्रिया:** WHO किसी देश को मलेरिया मुक्त प्रमाणित करता है जब कम से कम लगातार 3 वर्षों तक वहां कोई स्वदेशी मलेरिया संचरण न हो। संचरण की पुन: स्थापना को रोकने के लिए देश में एक प्रभावी निगरानी प्रणाली होनी चाहिए।
- **वैश्विक स्थिति:** 43 देशों और 1 क्षेत्र को 'मलेरिया मुक्त' प्रमाणन प्राप्त हुआ है। दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र में, मालदीव (2015) और श्रीलंका (2016) को मलेरिया मुक्त प्रमाणित किया गया है। भारत को अभी तक मलेरिया मुक्त प्रमाणित नहीं किया गया है।

मलेरिया क्या है?

- **कारण: मलेरिया** प्लास्मोडियम परजीवी के कारण होने वाला एक जानलेवा रोग है।
- **प्रमुख परजीवी:** पी. फाल्सीपेरम और पी. विवैक्स मनुष्यों के लिए सबसे अधिक खतरा पैदा करते हैं।
- **प्रसार:** मलेरिया संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है।

- **जीवनचक्र:** संक्रमित मच्छर मनुष्यों को काटते हैं, जिससे परजीवी यकृत तक पहुंचते हैं, परिपक्व होते हैं, तथा लाल रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं।
- **प्रभावित क्षेत्र:** मुख्यत: अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमेरिका के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है।
- **लक्षण:** बुखार, ठंड लगना, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और थकान। मलेरिया की रोकथाम और उपचार दोनों संभव है।

डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन)

- **स्थापना:** 7 अप्रैल 1948 को स्थापित , मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में।
- **उद्देश्य:** वैश्विक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना, रोगों पर नियंत्रण करना और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में सुधार करना।
- **मुख्य कार्य**
  - वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों पर निगरानी रखें और मार्गदर्शन प्रदान करें।
  - स्वास्थ्य आपात स्थितियों (जैसे, COVID-19) के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं का समन्वय करना।
  - टीकाकरण कार्यक्रम और रोग नियंत्रण रणनीति जैसे स्वास्थ्य संबंधी दिशानिर्देश विकसित करें।
- **प्रमुख कार्यक्रम**
  - चेचक जैसी बीमारियों का उन्मूलन (सफलतापूर्वक उन्मूलन)।
  - वर्तमान फोकस में मलेरिया, तपेदिक, एचआईवी/एड्स और वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा शामिल हैं।
- **मलेरिया-मुक्त प्रमाणन:** विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) किसी देश को मलेरिया-मुक्त प्रमाणित करता है, जब लगातार तीन वर्षों तक कोई स्थानीय संचरण दर्ज नहीं किया जाता है।
- **वैश्विक पहल:** सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने की दिशा में कार्य करता है।

सरकारी योजनाएँ

फसल बीमा योजना

चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 2025-26 तक बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई)

- इसे कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत 2016 में लॉन्च किया गया था।
- पीएमएफबीवाई फसल विफलता के मामले में किसानों की आय की सुरक्षा के लिए व्यापक बीमा प्रदान करती है।
- **पात्रता:** इसमें सभी खाद्य, तिलहन और वार्षिक वाणिज्यिक/बागवानी फसलें शामिल हैं, जिनका पिछला उपज डेटा उपलब्ध है।
- **प्रीमियम दरें**
  - खरीफ फसलों के लिए 2%।
  - रबी फसलों के लिए 1.5%।
  - वार्षिक वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए 5%।
- **कार्यान्वयन:** पैनलबद्ध सामान्य बीमा कंपनियों द्वारा प्रबंधित, तथा चयन बोली के माध्यम से राज्य सरकारों द्वारा किया जाएगा।

पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (आरडब्ल्यूबीसीआईएस)

- इसे 2016 में लॉन्च किया गया था और इसकी देखरेख कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा की जाती है।
- आरडब्ल्यूबीसीआईएस का उद्देश्य प्रतिकूल मौसम स्थितियों, जैसे वर्षा, तापमान, हवा और आर्द्रता के कारण होने वाले वित्तीय नुकसान को कम करना है।
- **दृष्टिकोण:** फसल की पैदावार के लिए मौसम के मापदंडों का उपयोग करना, तथा किसानों को अनुमानित फसल नुकसान के लिए मुआवजा देना।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई)

चर्चा में क्यों ?

मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत मत्स्य पालन विभाग 6 जनवरी, 2024 को गुवाहाटी, असम में "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों की बैठक" की मेजबानी कर रहा है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह करेंगे।

पीएमएमएसवाई अवलोकन

- इसका उद्देश्य भारत के मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत विकास के माध्यम से नीली क्रांति को बढ़ावा देना है।

- 'आत्मनिर्भर भारत' पैकेज के हिस्से के रूप में ₹20,050 करोड़ के निवेश के साथ लॉन्च किया गया।
- सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 5 वर्षों के लिए (वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2024-25 तक) कार्यान्वित किया जाएगा।
- मछुआरों को बीमा, वित्तीय सहायता और किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) प्रदान करता है।
- इसे दो अलग-अलग घटकों के साथ एक व्यापक योजना के रूप में कार्यान्वित किया गया है,
  - **केन्द्रीय क्षेत्र योजना:** परियोजना लागत केन्द्र सरकार द्वारा वहन की जाएगी।
  - **केन्द्र प्रायोजित योजना:** सभी उप-घटक/गतिविधियाँ राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वित की जाएंगी तथा लागत केन्द्र और राज्य के बीच साझा की जाएगी।

उद्देश्य

- मछली उत्पादन और उत्पादकता को स्थायी रूप से बढ़ावा देना।
- मत्स्य पालन मूल्य श्रृंखला का आधुनिकीकरण करना तथा कटाई उपरांत प्रबंधन में सुधार करना।
- मछुआरों और किसानों की आय दोगुनी करना।
- कृषि सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात में मत्स्य पालन का योगदान बढ़ाना।
- आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना और मत्स्य प्रबंधन को मजबूत करना।

महत्व

- 2.8 करोड़ से अधिक मछुआरों और किसानों को सहायता प्रदान करता है, राष्ट्रीय आय, खाद्य सुरक्षा और रोजगार में योगदान देता है।
- आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए आय का प्रमुख स्रोत।
- भारत एक प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यातक है, तथा वित्त वर्ष 20 में मत्स्य निर्यात में जलीय कृषि का योगदान 70-75% रहा

पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना

चर्चा में क्यों?

केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने पीएम-सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना के तहत भुगतान सुरक्षा तंत्र और नवीकरणीय ऊर्जा सेवा कंपनी (आरईएससीओ) मॉडल और उपयोगिता आधारित एकत्रीकरण मॉडल के लिए केंद्रीय वित्तीय सहायता के कार्यान्वयन के लिए परिचालन दिशानिर्देश जारी किए हैं।

पीएम सूर्य घर-मुफ्त बिजली योजना

- **इसके बारे में :** वित्तीय सब्सिडी और सरलीकृत स्थापना के साथ सौर छत प्रणालियों को बढ़ावा देने वाली एक केंद्रीय योजना।
- **उद्देश्य :** छत पर सौर ऊर्जा इकाई लगाने वाले एक करोड़ परिवारों को मुफ्त बिजली (300 यूनिट/माह) उपलब्ध कराना।
- **कार्यान्वयन**
  - **राष्ट्रीय स्तर:** राष्ट्रीय कार्यक्रम कार्यान्वयन एजेंसी (एनपीआईए) द्वारा प्रबंधित।
  - **राज्य स्तर:** राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों (एसआईए) द्वारा प्रबंधित, जो वितरण उपयोगिताएँ (डिस्कॉम) या विद्युत/ऊर्जा विभाग हैं।
- **डिस्कॉम की भूमिका :** छत पर सौर ऊर्जा अपनाने में सुविधा प्रदान करना, नेट मीटर उपलब्ध कराना, तथा निरीक्षण और कमीशनिंग का कार्य संभालना।
- **सब्सिडी**
  - 2 किलोवाट तक की प्रणाली के लिए 60%.
  - 2kW-3kW के बीच की प्रणालियों के लिए 40%.
  - सब्सिडी की सीमा 3 किलोवाट रखी गई।
- **अतिरिक्त सुविधाएँ**
  - ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक जिले में आदर्श सौर गांव।
  - छत पर स्थापना को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय निकायों को प्रोत्साहन।

आयुष्मान भारत

आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई)

- **आयुष्मान भारत बारे में**
  - 2018 में शुरू की गई दुनिया की सबसे बड़ी सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य बीमा योजना।
  - द्वितीयक और तृतीयक देखभाल (सर्जरी, उपचार, दवाएं, निदान) के लिए प्रति परिवार ₹5 लाख प्रदान करता है।
- **लाभार्थी**
  - सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (एसईसीसी) डेटा के माध्यम से पहचाने गए परिवारों को लक्षित किया जाता है।
  - राज्य/संघ राज्य क्षेत्र शेष अप्रमाणित परिवारों के लिए समान सामाजिक-आर्थिक डेटाबेस का उपयोग कर सकते हैं।

- **अनुदान**
  - अपने स्वयं के विधानमंडल वाले राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए 60:40 का हिस्सा।
  - पूर्वोत्तर राज्यों, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के लिए 90:10 का हिस्सा।
  - विधानमंडल रहित संघ शासित प्रदेशों के लिए 100% केंद्रीय वित्तपोषण।
- **नोडल एजेंसी**
  - राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) राज्यों के साथ मिलकर कार्यान्वयन की देखरेख करता है।
  - राज्य स्वास्थ्य एजेंसी (एसएचए) राज्य स्तर पर कार्यान्वयन का कार्य संभालती है।

अपार आईडी

चर्चा में क्यों?

शिक्षा मंत्रालय ने देशभर में विद्यार्थियों के शैक्षणिक रिकॉर्ड को एकीकृत और सुव्यवस्थित करने के लिए APAAR ID की शुरुआत की है, जिसे "एक राष्ट्र एक विद्यार्थी आईडी कार्ड" कहा जाता है।

अपार क्या है?

- एपीएएआर का तात्पर्य स्वचालित स्थायी शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री है।
- यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और राष्ट्रीय क्रेडिट और योग्यता फ्रेमवर्क (एनसीआरएफ) के तहत शुरू की गई एक विशिष्ट पहचान प्रणाली है।
- यह भारत में प्रत्येक छात्र को एक स्थायी 12-अंकीय आईडी प्रदान करता है ताकि वह अपने शैक्षणिक रिकॉर्ड को एक ही मंच पर समेकित कर सके।

प्रमुख विशेषताएँ

- **स्वैच्छिक पंजीकरण** : छात्र पंजीकरण कराना चुन सकते हैं; यह अनिवार्य नहीं है।
- **उद्देश्य** : 260 मिलियन से अधिक छात्रों की शैक्षिक प्रगति पर नज़र रखकर तथा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त दस्तावेज़ बनाकर शैक्षणिक अनुभव को सरल और बेहतर बनाना।

फ़ायदे

- **पारदर्शिता और जवाबदेही** : शैक्षणिक प्रगति पर नज़र रखता है और रिकॉर्ड को सुव्यवस्थित करता है।
- **समग्र विकास** : इसमें शैक्षणिक रिकॉर्ड के साथ-साथ सह-पाठ्यचर्या उपलब्धियां भी शामिल हैं।
- **दक्षता और धोखाधड़ी की रोकथाम** : डेटा की सटीकता को बढ़ाता है और रिकॉर्ड के दुरुपयोग को रोकता है।
- **पहुंच में आसानी** : रोजगार के अवसरों के लिए सुचारू स्थानान्तरण और अभिलेखों के आसान आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।
- **डेटा-संचालित निर्णय** : संस्थानों और छात्रों के लिए सूचित निर्णय लेने में सहायता करता है।

क्या आप जानते हैं?

अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शुरू किया गया अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट शैक्षणिक संस्थानों के बीच अकादमिक क्रेडिट के निर्बाध हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है। यह छात्रों को उनके अर्जित क्रेडिट को बनाए रखते हुए स्कूलों या कार्यक्रमों के बीच संक्रमण करने में सक्षम बनाता है, जिससे लचीलेपन और शैक्षणिक गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है।

डिजिलॉकर: डिजिलॉकर एक क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म है जिसे इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा डिजिटल इंडिया पहल के तहत विकसित किया गया है। यह उपयोगकर्ताओं को दस्तावेजों और प्रमाणपत्रों को डिजिटल रूप से सुरक्षित रूप से संग्रहीत, जारी और सत्यापित करने की अनुमति देता है। सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2016 के तहत डिजिलॉकर में संग्रहीत दस्तावेज़ों को कानूनी रूप से मूल भौतिक दस्तावेज़ों के बराबर माना जाता है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और सुकन्या समृद्धि योजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) योजना और सुकन्या समृद्धि योजना ने लॉन्च के बाद से अपनी 10वीं वर्षगांठ मनाई।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) योजना

- **उद्देश्य** : बाल लिंग अनुपात (सीएसआर) में सुधार करना, लिंग-पक्षपाती लिंग चयन को रोकना और बालिकाओं के अस्तित्व, संरक्षण और शिक्षा को बढ़ावा देना।
- **मुख्य उद्देश्य**
  - जन्म के समय लिंग अनुपात (एसआरबी) में प्रतिवर्ष 2 अंकों का सुधार करना।

- 95% या उससे अधिक की सतत संस्थागत प्रसव दर हासिल करना।
- प्रथम तिमाही में प्रसवपूर्व देखभाल पंजीकरण और माध्यमिक शिक्षा नामांकन में प्रतिवर्ष 1% की वृद्धि करना।
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की स्कूल छोड़ने की दर में कमी लाना।
- सुरक्षित मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के बारे में जागरूकता बढ़ाएं।

- **लक्ष्य समूह**
  - प्राथमिक: युवा दम्पति, भावी माता-पिता, किशोर और समुदाय।
  - माध्यमिक: स्कूल, आंगनवाड़ी केंद्र, चिकित्सा पेशेवर, स्थानीय सरकारी निकाय, गैर सरकारी संगठन, मीडिया और धार्मिक नेता।

सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)

- **उद्देश्य:** बालिकाओं के भविष्य के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना, शिक्षा और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करना।
- **पात्रता:** यह खाता किसी भी निवासी भारतीय बालिका के लिए खुला है, जिसका खाता जन्म से 10 वर्ष की आयु के बीच खोला गया हो।
- **मुख्य उद्देश्य**
  - बालिकाओं की शिक्षा और विवाह के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना।
  - बालिकाओं के भविष्य के लिए दीर्घकालिक बचत को प्रोत्साहित करें।
  - बचत को बढ़ावा देने के लिए कर लाभ और उच्च ब्याज दरें प्रदान करें।
  - बचत के माध्यम से वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करें और सशक्तिकरण का समर्थन करें।

महत्वपूर्ण तिथियाँ एवं घटनाएँ

विश्व ब्रेल दिवस

विश्व ब्रेल दिवस

2019 से यह दिवस प्रतिवर्ष 4 जनवरी को मनाया जाता है, ताकि दृष्टिहीन और आंशिक रूप से दृष्टिहीन लोगों के लिए संचार और मानवाधिकारों में ब्रेल की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके।

- **ब्रेल** : अक्षरों, संख्याओं और प्रतीकों (संगीतमय, गणितीय और वैज्ञानिक संकेतन सहित) को दर्शाने के लिए छह बिंदुओं का उपयोग करने वाली एक स्पर्शनीय प्रणाली।
- **उत्पत्ति** : 19वीं शताब्दी में फ्रांस में लुई ब्रेल द्वारा विकसित।
- **उद्देश्य** : दृष्टिहीन और आंशिक रूप से दृष्टिहीन व्यक्तियों को दृष्टि वाले लोगों की तरह किताबें और पत्रिकाएँ पढ़ने की सुविधा प्रदान करना।
- **महत्व** : शिक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक समावेश के लिए आवश्यक, जैसा कि विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन के अनुच्छेद 2 में बल दिया गया है।

विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन के अनुच्छेद 2 में विकलांगता, उचित आवास और सार्वभौमिक डिजाइन को परिभाषित किया गया है। यह विकलांग व्यक्तियों के लिए समान भागीदारी, पहुंच और समावेश सुनिश्चित करता है। लेख में पूर्ण सामाजिक भागीदारी के लिए बाधाओं को दूर करने के महत्व पर जोर दिया गया है।

गुरु गोबिंद सिंह जयंती

चर्चा में क्यों?

गुरु गोबिंद सिंह जयंती 2025, नानकशाही कैलेंडर के अनुसार, 6 जनवरी, 2025 को गुरु गोबिंद सिंह जी की 358वीं जयंती है।

गुरु गोबिंद सिंह

गुरु गोबिंद सिंह के बारे में

दसवें और अंतिम सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह का जन्म 22 दिसंबर, 1666 को पटना, बिहार में हुआ था। वे अपने पिता गुरु तेग बहादुर की मृत्यु के बाद नौ वर्ष की आयु में सिख गुरु बन गए। 1708 में उनकी हत्या कर दी गई थी।

योगदान

- **धार्मिक** : गुरु गोबिंद सिंह ने बालों को ढकने के लिए पगड़ी की शुरुआत की और खालसा की स्थापना की, जो पाँच क पर आधारित

है: केश (बिना कटे बाल), कंगा (कंघी), कड़ा (कंगन), कृपाण (खंजर), और कचेरा (जंजीर)। उन्होंने खालसा योद्धाओं के लिए दिशा-निर्देश भी स्थापित किए, जिसमें तंबाकू, शराब और हलाल मांस से परहेज करना और निर्दोषों की रक्षा करना शामिल है। उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब को सिखों के लिए शाश्वत गुरु घोषित किया।

- **युद्ध:** गुरु गोबिंद सिंह ने 1705 में मुक्तसर की लड़ाई में मुगलों से लड़ाई लड़ी और 1704 में आनंदपुर की लड़ाई में अपनी मां और दो बेटों को खो दिया। उनके सबसे बड़े बेटे की भी लड़ाई में मृत्यु हो गई।
- **साहित्यिक** : उनकी रचनाओं में जाप साहिब, बेनती चौपाई, अमृत सवैये और मुगल सम्राट औरंगजेब को लिखा गया पत्र जफरनामा शामिल हैं।

क्या आप जानते हैं ?

नानकशाही कैलेंडर एक सौर कैलेंडर है जिसे 2003 में सिखों द्वारा सूर्य की गति के आधार पर शुरू किया गया था। यह सिखों के कार्यक्रमों की तिथियां निर्धारित करता है और वैश्विक समारोहों में एकरूपता सुनिश्चित करता है।

18 वां प्रवासी भारतीय दिवस

चर्चा में क्यों ?

प्रवासी भारतीय दिवस (एनआरआई दिवस) 8 से 10 जनवरी, 2025 तक ओडिशा के भुवनेश्वर में मनाया जा रहा है। "विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान" विषय के साथ यह कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है।

प्रवासी भारतीय दिवस (अनिवासी भारतीय दिवस) 2025

- **तिथियां और स्थान:** 8 से 10 जनवरी, 2025 तक भुवनेश्वर, ओडिशा में मनाया जाएगा।
- **विषय:** "विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान।

महत्व

- 9 जनवरी 1915 को महात्मा गांधी की भारत वापसी की याद में यह दिवस मनाया जाता है।
- यह पुरस्कार भारत के विकास और वैश्विक छवि के लिए विदेशों में रह रहे 32 मिलियन से अधिक भारतीयों के योगदान को मान्यता देता है।

मुख्य बातें

- **सांस्कृतिक और इंटरैक्टिव सत्र:** चर्चाएं नवाचार, आर्थिक विकास और स्थिरता में प्रवासी समुदाय की भूमिका पर केंद्रित होंगी।
- **युवा वर्ग:** यह प्रवासी समुदाय के युवा सदस्यों को प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और नवाचार जैसे क्षेत्रों में शामिल करता है।
- **प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार:** अपने क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए प्रवासी भारतीयों को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान।

हाल के समारोहों की विशेषताएँ

- **डिजिटल भागीदारी:** "आज़ादी का अमृत महोत्सव" जैसी आभासी प्रदर्शनियाँ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी समुदाय के योगदान को प्रदर्शित करती हैं।
- **सरकारी सहयोग:** विकासात्मक प्राथमिकताओं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और आर्थिक पहलों पर चर्चा के लिए मंच।

महत्त्व

- भारत और उसके वैश्विक प्रवासी समुदाय के बीच संबंध मजबूत होंगे।
- "विकसित भारत" के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय विकास में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

विश्व हिंदी दिवस 2025

चर्चा में क्यों ?

विश्व हिंदी दिवस, जो प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है, हिंदी भाषा के वैश्विक महत्व और प्रचार-प्रसार पर बल देता है।

विश्व हिंदी दिवस 2025: मुख्य बिंदु

- **तिथि:** प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है।
- **ऐतिहासिक महत्व:** 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में मनाया जाता है।
- **पहली बार मनाया गया:** 2006 में , विश्व स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए।

2025 के लिए विषय

- "हिंदी: एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज।"
- अंतर्राष्ट्रीय भाषाई आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और हिंदी को डिजिटल प्लेटफार्मों में एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

उद्देश्य

- हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा दें।
- अपनी सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत का जश्न मनाएं।
- विश्व भर के शैक्षणिक संस्थानों को हिंदी को एक विषय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- वैश्विक संचार और कूटनीति में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डालें।

विश्व हिंदी दिवस और राष्ट्रीय हिंदी दिवस के बीच अंतर

- **विश्व हिंदी दिवस:** 10 जनवरी को मनाया जाता है; विश्व स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देता है।
- **राष्ट्रीय हिंदी दिवस:** 14 सितंबर को मनाया जाता है; यह दिवस हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने का प्रतीक है।

महाकुंभ 2025

चर्चा में क्यों ?

महाकुंभ मेला 2025 का शुभारंभ 13 जनवरी को प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में हुआ और यह 26 फरवरी को संपन्न होगा। यह 45-दिनों तक चलने वाला आध्यात्मिक आयोजन है, जिसमें 400 मिलियन से अधिक श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है।

प्रयागराज में महाकुंभ मेला सभा

कुंभ मेला

अर्थ : कुंभ शब्द कुंभक (अमरता का प्रतीक एक पवित्र घड़ा) से आया है।

कुंभ मेला क्या है ?

- पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम।
- श्रद्धालुओं ने चार स्थानों पर पवित्र नदियों में डुबकी लगाई
  - **हरिद्वार :** गंगा नदी।
  - **उज्जैन :** शिप्रा नदी.
  - **नासिक :** गोदावरी नदी।
  - **प्रयागराज :** गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम.

कुंभ के प्रकार

- **कुंभ मेला :** प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक 12 वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- **अर्ध-कुंभ मेला :** हर 6 साल में हरिद्वार और प्रयागराज में।
- **महाकुंभ :** प्रत्येक 144 वर्ष में एक बार प्रयागराज में।
- **माघ कुंभ :** प्रयागराज में जनवरी-फरवरी में होने वाला वार्षिक आयोजन।

ऐतिहासिक महत्व

- इसका उद्गम पुराणों से है , जिसमें अमरता के अमृत की कथा का वर्णन है।
- मौर्य, गुप्त और हर्षवर्धन काल के दौरान प्रमुख बन गया।
- चोल, विजयनगर राजाओं और मुगलों (जैसे, अकबर) जैसे शासकों द्वारा समर्थित।

यूनेस्को मान्यता: 2017 में, कुंभ मेले को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी गई थी , जिसमें प्राचीन परंपराओं और सांस्कृतिक एकता को संरक्षित करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया था।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (2019)

- सबसे बड़ी यातायात एवं भीड़ प्रबंधन योजना।
- "पेंट माई सिटी" योजना के तहत सबसे बड़ा सार्वजनिक पेंटिंग अभ्यास।
- सबसे व्यापक स्वच्छता और अपशिष्ट निपटान प्रणाली।

अवनियापुरम जल्लीकट्टू 2025

चर्चा में क्यों ?

तमिलनाडु में अवनियापुरम जल्लीकट्टू कार्यक्रम 14 जनवरी, 2025 को शुरू हुआ, जिसमें 1,100 बैल और 900 बैल-प्रशिक्षक भाग लेंगे।

जल्लीकट्टू

अवनियापुरम जल्लीकट्टू 2025 - मुख्य बिंदु

- **कार्यक्रम का अवलोकन**
  - अवनियापुरम जल्लीकट्टू पोंगल त्योहार के हिस्से के रूप में तमिलनाडु के अवनियापुरम में आयोजित एक पारंपरिक बैल-वशीकरण कार्यक्रम है।
  - 2025 का आयोजन 14 जनवरी को शुरू हुआ जिसमें 1,100 बैल और 900 बैल-प्रशिक्षक भाग लेंगे।
- **पुरस्कार**
  - सर्वश्रेष्ठ बैल के मालिक को 11 लाख रुपए का ट्रैक्टर मिलेगा।
  - बैलों को काबू करने में सबसे आगे रहने वाले को अन्य पुरस्कारों के साथ 8 लाख रुपए की कार भी मिलेगी।
- **नियामक ढांचा**
  - 2014 में पशु क्रूरता की चिंताओं के कारण सुप्रीम कोर्ट ने जल्लीकट्टू पर प्रतिबंध लगा दिया।
  - **2017 अध्यादेश** : तमिलनाडु सरकार ने नियमों के साथ जल्लीकट्टू को वैध कर दिया।
  - **पशु कल्याण :** तमिलनाडु पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अंतर्गत बैलों और प्रतिभागियों के लिए सुरक्षा उपाय।
- **सांस्कृतिक महत्व:** जल्लीकट्टू तमिल सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो साहस और शक्ति का प्रतीक है।

77वां भारतीय सेना दिवस 2025

चर्चा में क्यों ?

प्रत्येक वर्ष 15 जनवरी को भारत भारतीय सेना दिवस मनाता है, जो एक महत्वपूर्ण अवसर है जो भारतीय सेना की स्थापना और भारतीय नेतृत्व को सत्ता के ऐतिहासिक हस्तांतरण का सम्मान करता है।

भारतीय सेना दिवस - मुख्य बिंदु

- **तिथि** : भारतीय सेना की स्थापना और 1949 में भारतीय नेतृत्व में इसके परिवर्तन के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 15 जनवरी को मनाया जाता है।
- **ऐतिहासिक महत्व:** फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा जनरल फ्रांसिस बुचर के बाद प्रथम भारतीय कमांडर-इन-चीफ बने, जिससे सेना पर ब्रिटिश नियंत्रण समाप्त हो गया।
- **भारतीय सेना दिवस क्यों मनाया जाता है ?**
  - **नेतृत्व परिवर्तन का सम्मान** : सैन्य नेतृत्व में भारत की संप्रभुता और आत्मनिर्भरता का स्मरण।
  - **बलिदान को मान्यता** : देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।
  - **देशभक्ति को बढ़ावा देना** : सशस्त्र बलों के प्रति सम्मान की प्रेरणा देता है और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करता है।
  - **राष्ट्रीय एकता** : एकता को बढ़ावा देता है और नागरिकों और सशस्त्र बलों के बीच बंधन को मजबूत करता है।
- **77वां भारतीय सेना दिवस (2025)**
  - **विषय:** "समर्थ भारत, सक्षम सेना" (सशक्त भारत, सक्षम सेना)।
  - **मुख्य बातें**
    - **स्थान** : पुणे में सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करने वाली परेड के साथ मनाया जाता है।

- **सैन्य परेड** : सटीकता, अनुशासन और शक्ति का प्रदर्शन।
- **जातीय नृत्य प्रदर्शन** : भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व।
- **प्रदर्शनियाँ** : आधुनिक सैन्य उपकरण और हथियार प्रदर्शित।
- **युद्ध अभ्यास** : भारतीय सेना की उन्नत क्षमताओं का प्रदर्शन।
- **महिला अग्निवीर टुकड़ी** : सेना में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी पर प्रकाश डालना।

- **स्थान परिवर्तन** : 2025 में भारतीय सेना की परेड दिल्ली छावनी के पारंपरिक स्थल से हटकर पुणे में आयोजित की जाएगी।
  - वर्ष 2024 में परेड का आयोजन लखनऊ में किया जाएगा, जो दिल्ली छावनी के सामान्य स्थान से हटकर होगा।

क्या आप जानते हैं ?	
भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना के आदर्श वाक्य हैं,	
	भारतीय सेना: सेवा परमो धर्म
	भारतीय नौसेना: शम् नो वरुण
	भारतीय वायुसेना: नभ: स्पृशं दीप्तम

राष्ट्रीय बालिका दिवस 2025

चर्चा में क्यों ?

24 जनवरी को मनाए जाने वाले राष्ट्रीय बालिका दिवस का उद्देश्य बालिकाओं के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय बालिका दिवस

- **उत्सव की तिथि:** भारत में हर साल 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है।
- **उद्देश्य** : यह दिवस बालिकाओं के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने और शिक्षा, स्वास्थ्य और समानता सहित उनके अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।
- **सरकार की पहल** : इस दिवस की शुरुआत 2008 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा लड़कियों के सामने आने वाली समस्याओं और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालने के लिए की गई थी।
- **प्रमुख ध्यान आकर्षित क्षेत्र**
  - लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना तथा स्कूल में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
  - स्वास्थ्य और पोषण सुनिश्चित करना, विशेष रूप से कुपोषण और कम उम्र में विवाह जैसे मुद्दों का समाधान करना।
  - लड़कियों को हिंसा, दुर्व्यवहार और भेदभाव से बचाना।
  - खेल, राजनीति और कार्यबल सहित विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक समानता का समर्थन करना।
- **महत्व** : यह दिन एक प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में लड़कियों की भूमिका को रेखांकित करता है और लोगों को बालिकाओं के बेहतर भविष्य को सुरक्षित करने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस: महत्व और भारत का गणतंत्र बनने का सफर

कर्तव्य पथ, पूर्व में राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड।

गणतंत्र दिवस क्यों मनाया जाता है ?

- गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) वह दिन है जब 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ और भारत एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तित हो गया।

- यह तिथि 26 जनवरी 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के दौरान पूर्ण स्वराज की घोषणा के सम्मान के लिए चुनी गई थी।

शब्द "गणतंत्र"

- लैटिन शब्द "रेस पब्लिका" से लिया गया है जिसका अर्थ है "सार्वजनिक मामला।"
- इस अवधारणा की जड़ें रोमन गणराज्य में हैं, जिसकी प्रारंभिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था भारत के महाजनपदों जैसे कम्बोज, कुरु और मल्ल में देखी जा सकती है।

झंडा ध्वजावोलन बनाम ध्वजारोहण

- **गणतंत्र दिवस**
  - भारत के राष्ट्रपति ध्वजावोलन करते हैं।
  - संवैधानिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता के नवीनीकरण का प्रतीक है।
  - यह पहले से मौजूद स्थिति में झंडे को खोलने का संकेत देता है।
- **स्वतंत्रता दिवस**
  - प्रधानमंत्री ध्वजारोहण करते हैं।
  - यह औपनिवेशिक शासन से मुक्ति और एक नए राष्ट्र के जन्म का प्रतिनिधित्व करता है।
  - यह झंडे को पहली बार ऊपर उठाने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

गणतंत्र दिवस का महत्व

- **सच्ची स्वतंत्रता** : 26 जनवरी 1950 को भारत अपने संविधान के साथ एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया।
- **विविधता में एकता** : यह भारत की एक ही संविधान द्वारा शासित होने की इच्छा को दर्शाता है।
- **मूल मूल्य** : संप्रभुता, लोकतंत्र और गणतंत्रात्मक सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करते हैं।
  - **संप्रभुता** : भारत अपने मामलों में स्वतंत्र है।
  - **लोकतांत्रिक** : सर्वोच्च शक्ति जनता के पास होती है।
  - **गणतंत्र** : राष्ट्रपति राज्य का निर्वाचित प्रमुख होता है।

संविधान की प्रमुख उपलब्धियाँ

- **26 नवम्बर 1949** : इस दिन संविधान को अपनाया गया और नागरिकता, चुनाव, अनंतिम संसद और संक्रमणकालीन अनुच्छेद जैसे प्रावधान लागू हुए।
- **26 जनवरी 1950** : संविधान पूर्ण रूप से लागू हुआ, जिसने एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में भारत की यात्रा को चिह्नित किया।

भारत के संविधान के बारे में मुख्य तथ्य

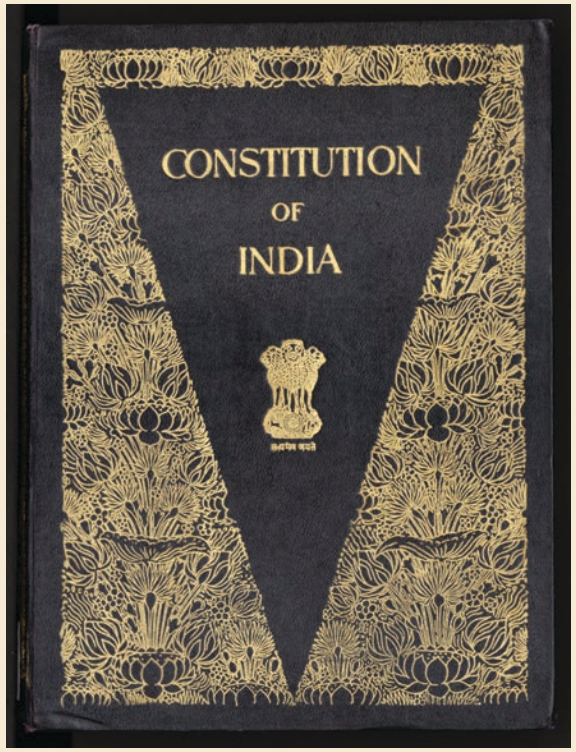

भारत का संविधान

- **अंगीकरण** : 26 नवम्बर 1949 को अपनाया गया, 26 जनवरी 1950 को प्रभावी हुआ।
- **लंबाई** : 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियों (मूल रूप से) वाला सबसे लंबा लिखित संविधान।
- **प्रारूप समिति** : डॉ. बी.आर. अंबेडकर की अध्यक्षता में।
- **भाषा** : अंग्रेजी और हिंदी में लिखित।
- **हस्तलेखन** : मूल प्रतियां प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा द्वारा सुलेख में हस्तलिखित थीं।
- **कलाकृतियाँ** : इसमें शांतिनिकेतन के नंदलाल बोस और उनकी टीम द्वारा बनाए गए चित्र शामिल हैं।
- **प्रस्तावना** : भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करता है।

2025 गणतंत्र दिवस की झांकी की मुख्य विशेषताएं

तीनों सेनाओं की झांकी

- थीम: 'सशक्त और सुरक्षित भारत' (मजबूत और सुरक्षित भारत)।
- थल, जल और वायु में एकीकृत संचालन के साथ थल, नौसेना और वायु सेना के बीच तालमेल को प्रदर्शित किया गया।

- स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियां शामिल
  - अर्जुन मुख्य युद्धक टैंक
  - तेजस एमके II लड़ाकू विमान
  - उन्नत हल्का हेलीकॉप्टर
  - आईएनएस विशाखापत्तनम विध्वंसक

डीआरडीओ की झांकी

- **विषय:** "रक्षा कवच - बहु-क्षेत्रीय खतरों के विरुद्ध बहु-स्तरीय सुरक्षा।"
- अत्याधुनिक स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला गया:
  - त्वरित प्रतिक्रिया सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल
  - मध्यम शक्ति रडार – अरुध्रा
  - ड्रोन डिटेक्शन सिस्टम
  - उन्नत हल्के टारपीडो
  - धाराशक्ति इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली
  - स्वदेशी मानवरहित हवाई प्रणालियाँ

76वें गणतंत्र दिवस परेड (2025) में राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की झांकियां

राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	थीम	मुख्य आकर्षण
आंध्र प्रदेश	"एटिकोप्पका बोम्मालु - इको-फ्रेंडली वुडन टॉयज"	पारंपरिक लकड़ी के खिलौनों पर केंद्रित, जो पर्यावरण मित्रता को बढ़ावा देते हैं।
बिहार	"स्वर्णिम भारत: विरासत और विकास (नालंदा विश्वविद्यालय)"	क्षेत्र की समृद्ध बौद्ध विरासत और नालंदा विश्वविद्यालय को दर्शाया गया।
चंडीगढ़	"चंडीगढ़: विरासत, नवाचार और स्थिरता का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण"	फिल्म निर्माण में शहर के योगदान को प्रदर्शित किया गया।
दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव	"दमन एवियरी बर्ड पार्क और कुकरी मेमोरियल"	एवियरी बर्ड पार्क को उजागर किया और बहादुर भारतीय नौसेना नाविकों को श्रद्धांजलि दी।
दिल्ली	"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा"	शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के प्रयासों को उजागर किया।
गोवा	"गोवा की सांस्कृतिक विरासत"	दिविजा महोत्सव, कावी कला रूपों और गोवा की पर्यटन-समृद्ध विरासत को प्रदर्शित किया।
गुजरात	"स्वर्णिम भारत: विरासत और विकास"	12वीं शताब्दी की कीर्ति तोरण (वडनगर) और C-295 विमान असेंबली यूनिट को प्रदर्शित किया।
हरियाणा	"भगवद गीता और कृष्ण की शिक्षाएं"	आध्यात्मिक शिक्षाओं और भगवद गीता से जुड़ी विरासत पर केंद्रित।
कर्नाटक	"लक्कुंडी: पत्थर की शिल्पकला की जन्मस्थली"	सोमेश्वर और जैन बसादी जैसे जैन मंदिरों को उजागर किया, चालुक्य वंश कला को प्रदर्शित किया।
मध्य प्रदेश	"कूनो राष्ट्रीय उद्यान: चीतों की भूमि"	कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों के पुन: परिचय को दर्शाया।
पंजाब	"पंजाब: ज्ञान और बुद्धिमत्ता की भूमि"	पंजाब की शैक्षिक और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया।
त्रिपुरा	"अनंत श्रद्धा: 14 देवताओं की पूजा-खारची पूजा"	पारंपरिक खारची पूजा महोत्सव को उजागर किया।
उत्तर प्रदेश	"महाकुंभ 2025 - स्वर्णिम भारत: विरासत और विकास"	प्रयागराज में महाकुंभ और त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना, सरस्वती) को प्रदर्शित किया।

समाचार क्रमबद्ध में संगठन

भारतपोल पोर्टल

चर्चा में क्यों ?

भारत के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भगोड़ों पर नज़र रखने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में तेज़ी लाने में जांच एजेंसियों की प्रभावशीलता में सुधार लाने के लिए 'भारतपोल' पोर्टल लॉन्च किया।

भारतपोल पोर्टल के बारे में

- इसे केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने इंटरपोल के साथ वास्तविक समय की सूचना साझा करने के लिए बनाया है। यह केंद्रीय और राज्य दोनों एजेंसियों को इंटरपोल से सीधे जुड़ने की अनुमति देता है, जो पहले की सीबीआई तक सीमित प्रणाली की जगह लेता है।

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई)

- **स्थापना:** 1941 में विशेष पुलिस प्रतिष्ठान के रूप में (1963 में इसका नाम बदलकर सीबीआई कर दिया गया)।
- **क्षेत्राधिकार:** कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- **महत्वपूर्ण कार्यों**
  - भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध और साइबर अपराधों की जांच करता है।
  - उच्च प्रोफ़ाइल मामलों और राष्ट्रीय महत्व के मामलों को संभालता है।
  - अंतर्राष्ट्रीय अपराध जांच में इंटरपोल की सहायता करना।
- **महत्व**
  - इसे "न्यायपालिका की जांच शाखा" के रूप में जाना जाता है।
  - शासन में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।

नीति आयोग

चर्चा में क्यों ?

1 जनवरी 2015 को स्थापित नीति आयोग ने भारत के प्रमुख नीति थिंक टैंक के रूप में 10 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

नीति आयोग क्या है ?

1 जनवरी 2015 को स्थापित नीति आयोग ने योजना आयोग का स्थान लिया, जिसका फोकस शासन के लिए 'नीचे से ऊपर' दृष्टिकोण पर था, जिसमें 'अधिकतम शासन, न्यूनतम सरकार' और 'सहकारी संघवाद' की भावना पर बल दिया गया।

प्रमुख विशेषताएं

- **केन्द्रों**
  - **टीम इंडिया हब:** राज्यों और केंद्र के बीच इंटरफेस के रूप में कार्य करता है।
  - **ज्ञान एवं नवाचार केन्द्र:** नीति आयोग की थिंक-टैंक क्षमताओं का निर्माण करता है।
- **संघटन**
  - **अध्यक्ष:** प्रधानमंत्री।
  - **उपाध्यक्ष:** प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त।
  - **गवर्निंग काउंसिल:** इसमें सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल शामिल होते हैं।
  - **क्षेत्रीय परिषदें:** विशिष्ट क्षेत्रीय मुद्दों पर विचार करती हैं तथा इनकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री या उनके द्वारा नामित व्यक्ति द्वारा की जाती है।
  - **तदर्थ सदस्यता:** अनुसंधान संस्थानों के विशेषज्ञ (रोटेशनल)।
  - **पदेन सदस्यता:** प्रधानमंत्री द्वारा नामित अधिकतम चार केन्द्रीय मंत्री।

- **सीईओ:** प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त।
- **विशेष आमंत्रित:** प्रधानमंत्री द्वारा नामित विशेषज्ञ और क्षेत्र विशेषज्ञ।

तुलना: नीति आयोग बनाम योजना आयोग

पहलू	नीति आयोग	योजना आयोग
प्रकृति	सलाहकार थिंक टैंक	संविधान-अतिरिक्त निकाय
दृष्टिकोण	नीचे से ऊपर	उपर से नीचे
राज्य की भागीदारी	राज्य समान भागीदार हैं	राज्यों ने दर्शक की भूमिका निभाई
नीति अधिरोपण	नीतियाँ नहीं थोपता	राज्यों पर थोपी गई नीतियां
निधि आबंटन	कोई शक्तियां नहीं, वित्त मंत्रालय संभालेगा	धन आवंटित करने की शक्ति थी
नेतृत्व	प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त सीईओ	नियमित प्रक्रिया के माध्यम से सचिवों की नियुक्ति

नीति आयोग की प्रमुख पहल

पहल	उद्देश्य
एसडीजी इंडिया इंडेक्स	सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने की दिशा में भारत की प्रगति को मापता है।
समग्र जल प्रबंधन सूचकांक	जल संसाधन प्रबंधन में राज्यों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है।
अटल नवाचार मिशन (एआईएम)	पूरे भारत में नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।
एसएटीएच परियोजना	शिक्षा, स्वास्थ्य और जल में मानव पूंजी को बदलने के लिए स्थायी कार्रवाई का समर्थन करता है।
आकांक्षी जिला कार्यक्रम	इसका उद्देश्य अविकसित जिलों में सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में सुधार करना है।
स्कूल शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक	राज्यों में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन करता है।
जिला अस्पताल सूचकांक	भारत में जिला अस्पतालों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है।
स्वास्थ्य सूचकांक	राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की स्वास्थ्य प्रणाली के प्रदर्शन पर नज़र रखता है।
कृषि विपणन और सुधार सूचकांक	राज्यों को बेहतर कृषि विपणन के लिए सुधार अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
भारत नवाचार सूचकांक	भारतीय राज्यों की नवाचार क्षमताओं और पारिस्थितिकी तंत्र का आकलन करता है।
भारत को बदलने वाली महिलाएं पुरस्कार	समाज में परिवर्तन लाने वाली असाधारण महिला नेताओं को मान्यता दी गई।
सुशासन सूचकांक	राज्य और जिला स्तर पर शासन के प्रभाव की निगरानी करता है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

स्थापना

- एचएन कुंजरू समिति (1946) की सिफारिशों के आधार पर 1948 में स्थापित।
- इसकी उत्पत्ति ब्रिटिश युग के युवा संगठनों जैसे यूनिवर्सिटी कोर से हुई है।

वर्तमान संरचना

- संख्या: सेना, नौसेना और वायु सेना विंग से लगभग 14 लाख कैडेट।
- यह रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत आता है, जिसका नेतृत्व तीन सितारा रैंक का महानिदेशक करता है।

उपस्थिति पंजी

- हाई स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों के लिए खुला है।
- कैडेट्स को विभिन्न प्रशिक्षण चरण पूरे करने के बाद प्रमाण पत्र मिलते हैं।

प्रशिक्षण एवं गतिविधियाँ

- बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण के साथ-साथ सशस्त्र बलों पर अकादमिक ध्यान।
- इसमें प्रशिक्षण शिविर, साहसिक कार्यक्रम और अभ्यास शामिल हैं।

महत्व

- कैडेटों ने वर्षों से आपदा राहत प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- महामारी के दौरान, 60,000 कैडेटों ने देश भर में स्वैच्छिक राहत कार्यों में सहायता की।

चर्चित व्यक्तित्व

वी नारायणन नए इसरो प्रमुख नियुक्त

चर्चा में क्यों ?

प्रतिष्ठित प्रणोदन वैज्ञानिक वी नारायणन को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, वे एस सोमनाथ का स्थान लेंगे।

वी नारायणन

मुख्य बातें

- **नई भूमिका:** वी नारायणन ने इसरो का नेतृत्व संभाला, जो इसके प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक है।
- **विशेषज्ञता:** क्रायोजेनिक और अर्ध-क्रायोजेनिक प्रणालियों सहित प्रणोदन प्रौद्योगिकियों में उनके योगदान के लिए प्रसिद्ध।
- **प्रमुख योगदान:**
  - अभूतपूर्व प्रणोदन नवाचारों के माध्यम से भारत की अंतरिक्ष प्रक्षेपण क्षमताओं को उन्नत किया।
  - उपग्रह प्रक्षेपण और अंतरग्रहीय अन्वेषण सहित प्रमुख इसरो मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **भविष्य का फोकस:** इसरो को गगनयान और अंतरग्रहीय मिशनों सहित अंतरिक्ष अन्वेषण में नई सीमाओं की ओर ले जाने की उम्मीद है।

इसरो के बारे में

- **स्थापना:** 1969, डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में।
- **उद्देश्य:** राष्ट्रीय विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करना तथा अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की वैश्विक स्थिति को ऊंचा उठाना।
- **मुख्य सफलतायें**
  - **चंद्र एवं मंगल मिशन:** चंद्रयान श्रृंखला एवं मंगलयान।
  - **प्रक्षेपण यान:** पीएसएलवी और जीएसएलवी का विकास, जो अपनी विश्वसनीयता और लागत दक्षता के लिए जाने जाते हैं।
  - **मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम:** गगनयान का उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजना है।
  - **उपग्रह प्रक्षेपण:** इसरो को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ग्राहकों के लिए उपग्रह प्रक्षेपण के लिए जाना जाता है।

समाचार में व्यक्तित्व

व्यक्तित्व	विवरण	चर्चा में क्यों ?
एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह	वायु सेना प्रमुख	एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने 4-5 जनवरी, 2025 तक लक्षद्वीप द्वीप समूह का दौरा किया। उन्होंने मिनिकॉय और कावारती द्वीप समूह में वायु योद्धाओं के साथ बातचीत की, सैन्य प्रतिष्ठानों का दौरा किया और भारतीय वायु सेना, नौसेना और तटरक्षक बल के कर्मियों के साथ चर्चा की।

डॉ. राजगोपाला चिदंबरम	परमाणु वैज्ञानिक	भारत के परमाणु अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाने वाले अनुभवी परमाणु वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाला चिदंबरम का 4 जनवरी 2025 को निधन हो गया ।
माइक जॉनसन	संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष।	माइक जॉनसन पुन: अमेरिकी सदन के अध्यक्ष चुने गए।
एम. राजेश्वर राव	भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर।	डिप्टी गवर्नर एम. राजेश्वर राव को आरबीआई की मौद्रिक नीति और आर्थिक अनुसंधान विभागों का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया गया है, जो माइकल पात्रा का स्थान लेंगे, जिनका कार्यकाल 15 जनवरी, 2025 को समाप्त हो रहा है।
न्यायमूर्ति डीके उपाध्याय	भारतीय न्यायाधीश	न्यायमूर्ति देवेन्द्र कुमार उपाध्याय को दिल्ली उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया।
डोनाल्ड ट्रम्प	अमेरिकी राजनीतिज्ञ, मीडिया व्यक्तित्व और व्यवसायी	डोनाल्ड ट्रम्प का 20 जनवरी, 2025 को संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथग्रहण हुआ, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के 47 वें राष्ट्रपति के रूप में उनकी वापसी का प्रतीक है।
प्रबोवो सुबियांटो	इंडोनेशिया के राष्ट्रपति	भारत ने 26 जनवरी 2025 को अपने 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के लिए मुख्य अतिथि के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो की मेजबानी की
स्मृति मंधाना	भारतीय क्रिकेटर	भारतीय बल्लेबाज स्मृति मंधाना को 2024 में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आईसीसी महिला वनडे क्रिकेटर ऑफ द ईयर के रूप में सम्मानित किया गया है।

समाचार में स्थान

इंडोनेशिया

चर्चा में क्यों ?

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिआंतो 26 जनवरी 2025 को 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के लिए मुख्य अतिथि के रूप में भारत आए , जो भारत और इंडोनेशिया के बीच मजबूत द्विपक्षीय संबंधों और सहयोग का प्रतीक है।

इंडोनेशिया के बारे में मुख्य विवरण

इंडोनेशिया का मानचित्र

भूगोल

- **स्थान:** दक्षिण पूर्व एशिया, हिंद और प्रशांत महासागर के बीच।
- **द्वीपसमूह:** 17,000 से अधिक द्वीपों वाला विश्व का सबसे बड़ा द्वीपसमूह, जिसमें जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, सुलावेसी और न्यू गिनी शामिल हैं।
- **राजधानी:** जकार्ता (भविष्य की राजधानी: नुसंतारा, विकासाधीन)।
- **जलवायु:** उष्ण कटिबंधीय, गर्म, आर्द्र मौसम और पर्याप्त वर्षा।

भौतिक विशेषताएँ

- **ज्वालामुखी:** रिंग ऑफ फायर का हिस्सा, जिसमें 130 से अधिक सक्रिय ज्वालामुखी हैं।
- **पर्वत:** माउंट सेमेरू और माउंट रिंजानी उल्लेखनीय हैं।
- **वन:** विशाल उष्णकटिबंधीय वर्षावन।
- **नदियाँ:** महाकम, कपुआस और बारिटो नदियाँ।

अर्थव्यवस्था एवं मुद्रा

- **मुद्रा:** इंडोनेशियाई रुपिया (IDR).
- **प्रमुख उद्योग:** कृषि, खनन, तेल और गैस, विनिर्माण और पर्यटन।
- **निर्यात:** पाम तेल, कोयला, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम और रबर।

राजनीति

- **सरकार:** एकात्मक अध्यक्षीय संवैधानिक गणराज्य।
- **विधानमंडल:** द्विसदनीय जन परामर्शदात्री सभा (क्षेत्रीय प्रतिनिधि परिषद और जन प्रतिनिधि परिषद)।
- **स्वतंत्रता:** 17 अगस्त 1945 को नीदरलैंड से स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

संस्कृति और त्यौहार

- **सांस्कृतिक विविधता:** 300 से अधिक जातीय समूह और 700+ भाषाएँ , स्वदेशी, भारतीय, चीनी और यूरोपीय प्रभावों का मिश्रण।
- प्रमुख त्यौहार

- न्येपी
- हरि राया ईदुल फ़ित्री (ईद)
- गलुंगन और कुनिंगन
- वैसाक (बुद्ध दिवस)
- तोराजा अंतिम संस्कार संस्कार

राष्ट्रीय प्रतीक

- **राष्ट्रीय भाषा:** बहासा इंडोनेशिया।
- **राष्ट्रीय पक्षी:** जावन हॉक-ईगल।
- **राष्ट्रीय फूल:** चमेली।

खेल

38वें राष्ट्रीय खेल

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड के देहरादून में 38 वें राष्ट्रीय खेलों का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। उन्होंने भारत की खेल प्रतिभा को प्रदर्शित करने में इस आयोजन की भूमिका पर जोर दिया और 2036 ओलंपिक की मेजबानी करने की देश की महत्वाकांक्षा दोहराई।

38वें राष्ट्रीय खेलों का लोगो

राष्ट्रीय खेल 2025 के बारे में

- **अवलोकन:** एक बहु-खेल ओलंपिक शैली की प्रतियोगिता जिसमें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के एथलीट पदक के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
- **मेजबानी और कार्यक्रम:** 38वां संस्करण उत्तराखंड में 28 जनवरी से 14 फरवरी 2025 तक आयोजित किया जाएगा, जो राज्य की पहली मेजबानी होगी।
- **खेल और कार्यक्रम:** इसमें 32 प्रतिस्पर्धी विषय और 4 प्रदर्शन खेल शामिल हैं
  - कलारीपयट्टू (मार्शल आर्ट)
  - योगासन (फिटनेस खेल)
  - मल्लखम्ब (पोल/रस्सी पर जिमनास्टिक)
  - राफ्टिंग (साहसिक खेल)
- **शुभंकर एवं विषय:** मौली, मोनाल (उत्तराखंड का राज्य पक्षी) प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है और टैगलाइन "संकल्प से शिखर तक" दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता को दर्शाती है।

38वें राष्ट्रीय खेलों का शुभंकर

- **महत्व:** जमीनी स्तर पर खेल, बुनियादी ढांचे और पर्यटन को बढ़ावा देना, ओलंपिक और एशियाई खेलों जैसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए एथलीटों को तैयार करना।

खो-खो विश्व कप 2025

चर्चा में क्यों?

भारत ने खो-खो विश्व कप 2025 में पुरुष और महिला दोनों वर्गों में चैंपियनशिप खिताब जीता।

खो-खो विश्व कप 2025 के विजेता

खो-खो विश्व कप 2025 के बारे में

- **आयोजन का अवलोकन**
  - खो-खो विश्व कप 2025 का आयोजन भारतीय खो-खो महासंघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय खो-खो महासंघ के सहयोग से किया गया था।
  - यह आयोजन 13 से 19 जनवरी, 2025 तक इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।
  - इसमें छह महाद्वीपों के 23 देशों की 20 पुरुष टीमों और 19 महिला टीमों ने भाग लिया।
  - भारत पुरुष और महिला दोनों वर्गों में चैंपियन बनकर उभरा।
  - भारतीय पुरुष टीम ने फाइनल में नेपाल को 54-36 के स्कोर से हराया।
  - भारतीय महिला टीम ने नेपाल पर 78-40 से निर्णायक जीत हासिल की।
- **प्रारूप:** टीमें राउंड-रॉबिन प्रारूप में प्रतिस्पर्धा करती हैं, जिसमें शीर्ष प्रदर्शन करने वाली टीमें नॉकआउट राउंड और फाइनल में पहुंचती हैं।
- **प्रभाव:** इस टूर्नामेंट की सफलता से भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय बहु-खेल आयोजनों में खो-खो को शामिल करने की प्रेरणा मिलेगी तथा इस पारंपरिक खेल में वैश्विक भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा।

विजय हजारे ट्रॉफी

चर्चा में क्यों?

कर्नाटक ने विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 जीती, फाइनल में विदर्भ को 36 रनों से हराकर अपना पांचवां खिताब जीता।

विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25

- विजय हजारे ट्रॉफी भारत का प्रमुख घरेलू एक दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट है, जिसका नाम महान क्रिकेटर विजय हजारे के नाम पर रखा गया है। इसमें राज्य की टीमें भाग लेती हैं और यह खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय चयन के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने का एक महत्वपूर्ण मंच है।
- **चैंपियन:** कर्नाटक ने फाइनल में विदर्भ को 36 रनों से हराकर अपना पांचवां खिताब जीता।
- **फाइनल मैच की मुख्य बातें**
  - कर्नाटक ने स्मरण रविचंद्रन (शतक) और कृष्णन श्रीजीत के महत्वपूर्ण योगदान से 348/6 का स्कोर बनाया।
  - ध्रुव शौरी के 110 रनों की बदौलत विदर्भ की टीम 48.2 ओवर में 312 रन पर आउट हो गई।
- **शीर्ष प्रदर्शक**
  - **प्लेयर ऑफ द सीरीज:** करुण नायर (विदर्भ) ने टूर्नामेंट में 779 रन बनाए।
  - **शीर्ष गेंदबाज:** अर्शदीप सिंह (पंजाब) 20 विकेट के साथ।
- **टूर्नामेंट अवलोकन**
  - 32वें संस्करण में 38 टीमें शामिल थीं और यह 21 दिसंबर 2024 से 18 जनवरी 2025 तक चलेगा।
  - पिछले चैंपियन हरियाणा को सेमीफाइनल में कर्नाटक ने हरा दिया।